समीक्षा-आलेख.

सोलह आने सोलह लोग तथा अन्य समीक्षाएँ

……

गोवर्धन यादव

परिचय

***नाम**--गोवर्धन यादव

***पिता-.** स्व.श्री.भिक्कुलाल यादव

***जन्म स्थान -मुलताई.(जिला) बैतुल.म.प्र.**

* **जन्म तिथि-** 17-7-1944 *शिक्षा - स्नातक

*तीन दशक पूर्व कविताओं के माध्यम से साहित्य-जगत में प्रवेश

*देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का अनवरत प्रकाशन

*आकाशवाणी से रचनाओं का प्रकाशन

*करीब पैतीस कृतियों पर समीक्षाएं

***कृतियाँ** * महुआ के वृक्ष (कहानी संग्रह) सतलुज प्रकाशन पंचकुला(हरियाणा)

*तीस बरस घाटी (कहानी संग्रह,) वैभव प्रकाशन रायपुर (छ,ग.)

पीडीएफ ईबुक – गोवर्धन यादव का कविता संग्रह - बचे हुए समय में
http://www.rachanakar.org/2014/11/blog- post_51.html

पीडीएफ ईबुक : गोवर्धन यादव का लघुकथा संग्रह http://www.rachanakar.org/2014/11/blog- post_627.html

पीडीएफ ई बुक : गोवर्धन यादव का कहानी संग्रह - तीस बरस घाटी
http://www.rachanakar.org/2014/11/blog- post_969.html

: ई-बुक : कौमुदी महोत्सव - हमारे तीज त्यौहार http://www.rachanakar.org/2015/03/blog- post_444.html

पीडीएफ ईबुक – गोवर्धन यादव का कहानी संग्रह - महुआ के वृक्ष http://www.rachanakar.org/2014/11/blog-post_670.html

देश-विदेश की यात्राएं.

https://hindi.pratilipi.com/govardhan-yadav/ghumakkadi-romanchit-kar-dene-waali-yaatraaye
भारत के पर्व और त्योहार.
https://hindi.pratilipi.com/govardhan-yadav/bharat-me-parv-tyoharo-ki-shrinkhala-bhag-1

भारत के पर्व और त्योहार-पार्ट-२
https://hindi.pratilipi.com/govardhan-yadav/bharat-me-parv-tyoharo-ki-shrinkhala-2

सम्मान- बीस से अधिक सहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित.

***विशेष उपलब्धियाँ:-**औद्धोगिक नीति और संवर्धन विभाग के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित विषयों तथा गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित नीति में सलाह देने के लिए वाणिज्य और उद्धोग मंत्रालय,उद्धोग भवन नयी दिल्ली में "सदस्य" नामांकित (2)केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय(मानव संसाधन विकास

मंत्रालय) नयी दिल्ली द्वारा_कहानी संग्रह"महुआ के वृक्ष" तथा "तीस बरस घाटी" की खरीद की गई.(३) कई कहानियाँ का उर्दू, मराठी, राजस्थानी, उडिया, सिंधी आदि भाषाओं में अनुवादित की गईं.

यात्राएं- **हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए थाईलैण्ड, नेपाल, मारीशस, इन्डोनेशिया-मलेशिया आदि देशों का भ्रम**

*****संप्रति** - सेवानिवृत पोस्टमास्टर (एच.एस.जी.1)

संयोजक राष्ट्र भाषा प्रचार समिति जिला इकाई छिंन्दवाड़ा (म.प्र.) 480-001

फ़ोन.नम्बर–07162-246651 (चलित) 09424356400

Email= **yadav.goverdhan@rediffmail.com**

(2) **goverdhanyadav44@gmail.com**

....

अनुक्रम

1 **जंगल में क्रीकेट-**

२. **चांद पर पानी**

3 सतरंगी "बचपन"

4 आकाश तुम्हारा होगा (महावीर रवांल्टा)

5 चिनार के पंजे.

6 ऐसा भी होता है-

7 पन्द्रह सिंधी कहानियाँ

8 लौ दर्दे-दिल की (गजल संग्रह)-देवी नागरानी

9 तो अंग्रेज क्या बुरे थे -

10 माँ और ईश्वर.

11 सोलह आने-सोलह लोग.

12 हड़कंप

13 बर्फ़ की गर्मी.

14 नमि मेरी आँखें

15 रामदीन का चिराग

16 तवा का तेज

....

जंगल में क्रीकेट- २. चांद पर पानी

[1]

पुस्तक समीक्षा. -चांद पर पानी (२) जंगल में क्रीकेट

(दोनो पुस्तकें उद्योगनगर प्रकाशन गाजियाबाद से प्रकाशित मूल्य क्रमशः 35/-)

-0*0*0-

श्री कृष्णकुमार यादव एवं उनकी जीवन संगिनी श्रीमती आकांक्षा यादव की सद्द प्रकाशित बाल गीतों की कृतियाँ "जंगल में क्रिकेट" एवं चाँद पर पानी" प्रकाशित हो कर आयीं हैं,जिनका विमोचन उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल महोदय ने किया है. श्री यादव डाक विभाग में निदेशक जैसे जबाबदार एवं प्रतिष्ठित पद पर आसीन एवं श्रीमती आकांक्षा यादव कालेज में व्याख्याता के पद पर कार्य करते हुए अपने व्यस्ततम समय में से समय को चुराते हुए श्रेष्ठ साहित्यलेखन में निमग्न हैं,यह बात विशेषरुप से उल्लेखनीय है. यह एक ऐसा दुरूह कार्य है जिससे हर कोई बचना चाहता है. वर्तमान में शायद ही कोई ऐसी पत्र-पत्रिका शेष बची हो जिसमे आप दोनो के लेख-आलेख-कविता आदि प्रकाशित न होती हो. अपनी ओजस्वी एवं बेबाब लेखनी के लिए आप जाने जाते हैं. श्री कृष्णकुमार यादवजी की अब तक पांच कृतियां"अभिलाषा" अभिव्यक्तियों के बहाने,"अनुभूतियां और विमर्श,"इन्डिया पोस्ट-150ग्लोरियस ईअर्स एवं क्रांति-यज्ञ का निरन्तर प्रकाशन ,एवं तीन पत्रिकाओं के अतिथि संपादक तथा कई पुस्तको पर आपके समीक्षा आलेखों का प्रकाशन ,यह इंगित करता है कि आपमें साहित्य लेखनी कर्म

में अदभुत क्षमताएं हैं और आपने देश-विदेश में अपनी विशिष्ठ छाप छोडी है. इसी तरह आकांक्षाजी ने भी सह -संपादन के क्षेत्र मे विशिष्ठ स्थान बना या है और हर विषय पर अपनी लेखनी का जादू जगाया है.

"जंगल में क्रिकेट" बाल गीत संग्रह में 30 गीत हैं, जो विभिन्न विषयों पर लिखे गए हैं. रिमझिम-रिमझिम,गुलाब,तीतली रानी,टिक-टिक,डालफ़िन आदि ऐसेविषय हैं,जिस पर आम आदमी यह सोच ही नहीं पाता कि इन्हें केन्द्र में रखकर कविताएं भी लिखी जा सकती है. इसीलिए तो किसी ने कहा है कि जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि. यह काम तो केवल वही कर सकता है जिसकी द्रष्टि सुक्षमता को पकड सकती है, जो उससे तादात्म स्थापित कर सकता है,जो उससे बतिया सकता है,वही तो उस पर लिख पाएगा.

इसी तरह आकांक्षाजी ने अपने बाल गीतों में उन्हीं विषयों का चुनाव किया है,जिससे बच्चों का विशेष लगाव होता है. संग्रह में कुल 30 बालगीत हैं. चांद पर पानी,नटखट बंदर,तितली रानी,तोता,गुडिया, पतंग,जंगल में दिवाली, कुछ ऐसे विषय हैं,जिनका नाम सुनते ही बच्चों के दिमाक में सिनेमा की रील की तरह एक द्रष्य उपस्थित होने लगता है और उसकी कल्पना शक्ति विस्तार लेने लगती है. यदि आप बच्चों में इस शक्ति का प्रवेश नहीं दिला सकते तो सारा किया -धरा व्यर्थ चला जाता है.

पशु जगत पर आपकी कविताओं को पढकर विष्णु शर्मा की याद हो आयी. उन्होंने पंचतंत्र में पशु-पक्षी जगत से संजीवक बैल,शेर जिसका नाम "पिंगलक था,रंगीन सियार, बुद्धिमान खरगोश,मुर्ख सियार आदि को लेकर जो रचना की थी,जो एक श्रृंखला में चलती हैं. और एक कथा के गर्भ से दूसरी कथा का जन्म होता है.आपने यह प्रयोग भले ही नहीं किया हो,परन्तु उस जानवर खास से कुछ सीखने को मिलता है. बच्चे ने भले ही उस जानवर को कभी देखा हो,लेकिन रचना- विधान उसके सामने उसकी आकृति रच देती है. मेरे अपने मत के अनुसार ऐसा होना उस रचना प्रक्रिया का सार्थक होना होता है.

बाल साहित्य चाहे वह किसी भी रुप में लिखा जाए,यदि वह बच्चों के द्वारा ग्राह्य नही है तो वह बाल-साहित्य की श्रेणी में कदापि आ ही नहीं सकता. रचना कर्म में यदि केवल मनोरंजन का पुट है और उसमें उपदेश का मर्म नहीं है तो वह बाल-साहित्य की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता. मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है" मनोंरंजन ही न कवि का कर्म होना चाहिए,उसमें उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए."

. बच्चों का मन कोमल एवं उर्वरक भूमि की तरह होता है. अतः बाल रचनाकार को इस बात का विशेष ध्यान रखना होता है कि वह अपने विचार ,जिसे हम बीज कह सकते हैं, के चयन में सावधानियां बरतने की महति आवश्यक्ता होती है. बच्चे देश के भावी श्रेष्ठ नागरिक ,योग्य,कुशल,सुसंस्कृत और सुचरित्रवान बने,यह एक मात्र उद्देश्य होता है बाल साहित्य लेखन का. बालसाहित्य एक ऐसा साहित्य है जिसे पढकर बच्चे आनन्दित हों,उनका सम्यक विकास हो और वे जीवन के संघर्षो से जुझने की दिशा मे अग्रसर हों,सही माने मे वही तो बाल साहित्य है. शब्दों का चयन रसीला होना जरुरी है ताकि बच्चे उसे गा सकें-दोहरा सकें,क्योकि भाषा जितनी सरल-सहज होगी वे ऐसा कर सकेंगे और उन्हें एक विशेष प्रकार की रसानुभूति होगी.

श्री कृष्णकुमार यादवजी एवं आकांक्षाजी ने बाल काव्य के शिल्प, जिसमें संगीतमयी भाषा, चित्रमयीभाषा,,सहज भाषा,तथा लोकभाषा का चुनाव करते हुए एवं उनको प्रयोग में लाते हुए जिन रचनाओं को रचा है , पढकर विशेष रस की निष्पत्ति होती है. बालकवि प्रायः उन छंदों का प्रयोग करता है जिसमें 10-10,12-12,14-10,14-14,16-12,16-16,20-16,20-20 मात्राओं का क्रम रहता है. बावजूद इसके जिस रचना में 16-12 का क्रम होता है,अपनी गेयता के कारण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, का प्रयोग आपने सफ़लता पूर्वक किया है.

मुझे विश्वास है कि दोनों ही कृतियाँ बाल-जगत के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगीं. वे बच्चों के मनोभूमि में उन बीजों को का बीजारोपण करने में सहायक सिद्ध होगीं, जो उन्हें कर्तव्यनिष्ठ,योग्य,कुशल, सुसंस्कृत,सुचरित्रवान, बनाने की

दिशा निर्देश देने में अपनी महति भूमिका का निर्वहन करेगी.

बाल-साहित्य पर श्रेष्ठ लेखन पर दोनों बधाई के पात्र हैं. मेरी असीम शुभकामनाएँ.

....

3. ## सतरंगी “बचपन”

लेखक-रुद्र प्रकाश “सरस”

प्रकाशन एवं वितरक-विनायक विध्यापीठ, भूणास, भीलवाड़ा (राज) प्रत्येक का मूल्य 30/-

चिंता रहित खेलना खाना वह फिरना निर्भय स्वछंद?
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद?” (सुभद्राकुमारी चौहान.)

बालसाहित्यकार रूद्र प्रकाश “सरस” द्वारा रचित सप्तवर्णी इन्द्रधनुष “बचपन” का एक साथ प्रकाशित होकर आना, इस बात का प्रमाण है कि उसकी रचनाधर्मिता नित-नए सोपानों को केवल छू ही नहीं रही है, बल्कि सक्रीयता के साथ रचनाक्रम निरन्तर जारी रखे हुए हैं. सात खण्डों के इस प्रकाशन में “विनायक विद्यापीठ” विनायकपुरम, भूणास, भीलवाडा (राजस्थान), तथा विद्यापीठ के निदेशक डा.श्री देवेन्द्र कुमावतजी को साधुवाद देना चाहिए कि आपके सबल आर्थिक सहयोग से इनका प्रकाशन संभव हो पाया.

बचपन-A में रचनाकार के आत्म निवेदन को पढकर इस बात के साफ़ संकेत मिलते हैं कि उनके द्वारा वर्ष 2003 में प्रकाशित कृति “बच्चों तुमको बात बताऊँ” की प्रतियाँ, जिला हरदोई के सारे विद्यालयों तक नहीं पहुँच पायी,जिसकी सघन पीडा, आज दिन तक उनको सालती रहती है. समूचे विश्व-पटल पर छा जाने का जज्बा और बच्चों तक पहुँच बनाने का रचनाकार का मन तो hohohotaaहोता है, लेकिन अर्थाभाव के कारण, ऎसा कर पाना, उनके लिए दिवास्वपन देखने जैसा हो सकता है. खैर जो भी हो उनके मन में यह उत्साह तो बना हुआ ही है कि वे अपने जीवन का जितना भी सर्वश्रेष्ठ हो सकता है, बच्चों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए वह कटिबद्ध देखाई देता हैं. उसके इस अदम्य साहस और विश्वास को रेखांकित करते हुए उसे साधुवाद दिया ही जाना चाहिए.

इस बात को कहते हुए अतिरिक्त प्रमाण जुटाए जाने की आवश्यकता नहीं है कि बालमन में रोपित संस्कार के बीज, जीवन पर्यन्त तक साथ बने रहते है. हमारे महान चितकों ने समूचे मानव-जीवन को सोलह संस्कारों से आविष्ठित होने का सूत्र दिया था,जिसका परिपालन न करते हुए आज के तथाकथित बुद्धिजीवी उसे हेय दृष्टि से देखते है और अंग्रेजियत ओढकर बच्चे के जन्म-दिन पर दीप जलाकर बुझाने का कुत्सित प्रयास करते हैं, जिसके घातक परिणाम प्रत्यक्ष-अप्रत्यरुप से दिखाई भी पडने लगे हैं.

बालसाहित्यकार ने इस बात को ध्यान में रखते हुए ईश-प्रार्थना से अपनी लेखनी को आगे बढाते हुए,ज्ञानार्जन से लेकर भाईचारा, देश प्रेम जैसे विषयों से बालमन को जोडने का प्रयास किया है. दो-दो लाइनों के क्रम को आगे बढाते हुए वे अन्य छोटी-बडी बातों का समावेश भी अपनी रचनाओं में करते हैं, जिसको देख -सुनकर बालमन उससे अपना तादात्म कौतुहलता के साथ जोडता चलता है सूरज, बादल,घोडा, चिडिया, गायें, तोता, चांद-सितारे, आदि विविध चित्र, अपनी विशेषताओं का स्वतः परिचय देते हुए सामने आते हैं.

वर्ड्सवर्थ ने बच्चे को मनुष्य का पिता कहा है. उनका तो यह भी कहना है कि बच्चा मन का राजा होता है और उसके मन को जाने बिना, टटोले बिना किया गया लेखन उसके मन माफ़िक कतई नहीं होता. रचनाकार श्री रुद्रजी को पढते हुए इस बात की पुष्टि होती है कि वे अपने स्व को बचपन की ओर मोडकर ले जाते हैं और तदानुसार उन्हें शब्दों में व्यक्त कर देते हैं.

इसी तरह मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है कि "बुढापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है".बात में सत्यता परिलक्षित होती है. तभी तो साठ की उम्र में भी रुद्रजी का बचपना झलक-झलक जाता है.

भाषा अत्यन्त सरल और सरस है, जिसका प्रभाव बालमन पर पडना लाजमी है..रचना का सरलीकृत होना ही इस बात का प्रमाण है कि इस तरह की रचनाएं ही सच्ची बाल-कविता हो सकती है, जिसे पढकर-सुनकर बालक, कविता के साथ बहने लगता है, थिरकने लगता है और कभी झूम-झूमकर नाच भी उठता है.

यह सच है कि कविता की लय से ही बालक का आन्तरिक संबंध स्थापित होता है. फ़िर बालकाव्य का उद्देश्य ही तो उसका मनोरंजन करना होता है. जब उसका मन इसमें रस लेने लगता है तो वह संवेदना के स्तर पर आकर स्वतः अंकुरित होने लगता है और शनैः-शनैः वह उसे एक सुयोग्य नागरिक के रूप में प्रतिस्थापित होने की तैयारी के लिए जमीन भी तैयार कराता चलता है.

रचनाकार ने रचनाओं का शिल्पगत ढांचा, उनका वस्तु-विधान, और आंतरिक तत्त्व जो उसे सुरुचि-पूर्ण बनाने और उसे अर्थपूर्ण बनाने में मददगार होता है, के विधान में पूरी ईमानदारी से, लगन के साथ मेहनत की है.

रचनाकार श्री रूद्र प्रकाश "सरस" ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न सिर्फ़ बालमन को छूने का सफ़ल प्रयास किया है, बल्कि बाल प्रतिभा विकास मंच की स्थापना कर उन्होंने अपने दृढ निश्चय को भी रेखांकित किया है. निश्चय ही वे साधुवाद के पात्र हैं.

मेरा अपना मानना है कि बाल साहित्य जगत में इस सप्तवर्णी "बचपन" का पुरजोत स्वागत किया जाना चाहिए, साथ ही यह भी कामना है कि अन्य क्षेत्र के बच्चों तक इसकी पहुँच बने और वह अपने पारसीय स्पर्ष से बालमनों में नयी चेतना और नये उत्साह का संचार करने में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करने में सफ़ल हो.

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

आकाश तुम्हारा होगा (महावीर रवांल्टा)

मैं सुकीर्ती प्रकाशन से प्रकाशित कविता संग्रह-"आकाश तुम्हारा होगा , में प्रकाशित कविताओं की बात कर रहा हूँ, जो लफ़्फ़ाजी और बडबोलेपन से दूर, बडॆ ही सहज रुप में ,किंतु गहरी अर्थ व्यंजना के साथ, एक अनूठे किस्म का अहसास कराती है. आपकी कविता कानों के जरिए मन-मस्तिस्क के कोने-अंतरों में जम जाती है और लंबे समय तक इनकी दस्तकें सुनाई देती हैं. इन कविताओं के भीतर से इन्हें सिरजने वाले/रचने वाले, भाई महावीर रलांल्टा का संपूर्ण व्यक्तित्व हमारे सामने आ जाता है. सचमुच वे वे उतने ही सहज-सरल और पारदर्शी रहे हैं,जितनी की उनकी सर्जना. दुनियां की जोडतोड से नावाकिफ़, जो आज की दुनिया में योग्य बनने के पहले आदमी को उसके कद से बडा बताकर सामने लाते हैं. कविताएं अपनी जमीन और जमीर को बचाये रखते हुए हमें आश्वस्त कराती है कि समय की तमाम आपाधापी, उखाड-पछाड,आदमी और आदमियत के तेजी से क्षरण के बीच, जो भी कुछ बचा हुआ है, अपनी मूलवर्ती पहचान, को अपने वजूद को जोडॆ हुए है. अनाहत, अक्षत-ईमानदार रचनाधार्मिता के भीतर से छनकार आती हुई आश्वस्ति-आज के बदरंग समय में कितनी मूल्यवान, कितनी अहम और कितनी सुखद है-आसानी से समझी जा सकती है.

श्री महावीर रवांल्टा मूलतः पहाडों के बीच रहने वाले (उत्तरकासी जनपद)व्यक्ति हैं. यहाँ की नीली-भूरी गगनचुंबी चोटियां मूक निमंत्रण देती लगती हैं. वे हमें अपने सम्मोहन के जाल में बांधकर अपने पास बुलाती हैं. दिन के उजाले में जल-जंगल-पहाड बडे अच्छॆ लगते हैं,लेकिन रात होते ही वे किसी दैत्य की तरह डरावने से लगने लगते हैं. कोई रात में यहाँ रुकना नहीं चाहता,(यह बात उन लोगों के लिए है, जो कभी-कभार पहाडॊं पर जाते हैं) लेकिन जिसने जन्म लिया है पहाडों के बीच, वह उसे छोडकर तो जा नहीं सकता. यह उनकी अपनी नियती है. यहाँ सारी कायनात उनकी दोस्त बन जाती है. कवि को पहाडों से प्यार है, वह उसी में रहकर पला-बढा है. उसकी चिता इन पहाडों को लेकर नहीं है, बल्कि उन पहाडों को लेकर है जिसे लोगों ने अपने जेहन में पाल रखा है, वह है "मैं" और जब अहं बडा हो जाता है तो पहाडॊ की ऊँचाइयां भी बौनी सी लगने लगती है. कवि को यही दुख सालता है कि शहरों के रहने वाले, पहाड में बसने वाले लोगों को, किसी दूसरी नजरों से देखते-समझते हैं.(कविता-पहाड-पेज ७८)."भले ही पहाडवासी/छॊड देते हो पहाड/पर पहाड उन्हें नहीं छोडते (कवित पहाडवासी-पेज-७५) यह कविता इस बात की पुष्टि करती है कि पहाडॊ के बीच रहने वाला आदमी, भले ही पहाड छोड दे,लेकिन पहाड उन्हें नहीं छोडते, माने यह कि दोनो एक-दूजे के संपूरक बन चुके होते हैं.एक अन्य कविता में-पहाडॊ को इंतजार बना रहता है कि उसका अपना साथी लौट आएगा(इंतजार-३,)

वरिष्ठ कवि श्री चन्द्रकांत देवताले ने "माँ" पर कविता न लिख सकने के अपने दर्द को उजागर करते हुए लिखा था कि वह सारे असंभव कामों को अंजाम दे सकता है, लेकिन माँ पर एक मुक्कमल कविता नहीं लिख सकता. शायद इस तरह लिखना इस बात को इंगित करता है कि मां का स्वरुप इतना विराट है कि उसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता. "माँ" कविता में महावीर(हनुमानजी का एक नाम, जो असंभव को भी संभव बनाना जानते हैं.)लिखते हैं-हजारों वर्ष पहले जैसी/अब भी है माँ/समय बदला/बदला परिवेश/पर नहीं बदली माँ."एक जानदार-शानदार कविता लिख जाते हैं. यह उनके गहरे सोच का ही परिणाम है.

मनुष्य विरोधी विचार, हर काल में, नए-नए रुप में उभरकर सामने आते रहे हैं, इसी के बरक्स, मनुष्यता को बचाए रखने की रचनात्मक पहल आदि काल से होती आ रही है. श्री रवांल्टा भी उसी के अनुरुप, समाज में मानवीयता बचाए रकने की पहल बराबर करते नजर आते हैं. इसी तरह प्रकृति में प्यार देखना, प्रकृति को अपने भीतर महसूस करना, तभी संभव है,जब कवि स्वय़ं प्रकृति में रचता-बसता हो. अपनी काव्य-रचना के माध्यम से उन्होंने अपने प्रकृति प्रेमी होने का प्रमाण भी दिया है.

संग्रह में वर्णित कविताओं को पढकर यह कहा जा सकता है कि–किसी कविता को अच्छी कविता बनाने वाला तत्व उसका "जीवन" होता है. अपनी सहजता- सरलता और निश्छल भावुकता से श्री महावीर रवांल्टाजी ने शब्दों के माध्यम से कागज पर उतारने का भरसक प्रयास किया है.

किसी ने कहा है-"इन्सान, इन्सान का दुख जानता है क्योंकि जीवन में उसकी भागीदारी बराबरी की रहती है. इसी भागीदारी ने उसे दूसरों के दुख में उदास होना और खुशी में मुस्कुराना सिखाया. लेकिन इन्सान अगर कवि अथवा कथाकार है तो वह हैवानों और पशुओं और पक्षियों के अन्तरमनों की सैर कर लेता है."

प्रख्यात कवि-आलोचक श्री विष्णु खरे से किसी ने यह सवाल किया था कि-" हमारे समय की कविता क्या हो सकती है? इस पर उन्होंने जवाब देते हुए कहा था- "वह उस सीमा रेखा की खोज है, जिसमे एक तरफ़ अर्थहीन शोर है और दूसरी ओर जड-खामोशियां. कविता इन दो स्थितियों के बीच इतिहास की तमाम विडम्बनाओं और त्रासदियों से गुजरती हुई, तमाम तरह के धोकों, फ़रेबों ,प्रपंचों और बदकारियों का सामना करती हुई भरोसे का एक निदान चाहती है और बुनियादी सवाल को उठाती है कि यह सब क्यों?"

मुझे लगता है कि श्री महावीर रवांल्टा ने अपनी कविताओं के माध्यम से इन सब प्रश्नों को बडी ही सहजता और सरलता से हल करने का प्रयास किया है. वे बधाई के पात्र है. मुझे उम्मीद ही नहीं, वरन पूरा विश्वास है कि उनके इस संग्रह से पाठक, पूरी तल्लीनता के साथ जुडेगा और इस संग्रह का सर्वत्र पुरजोर स्वागत होगा.

....

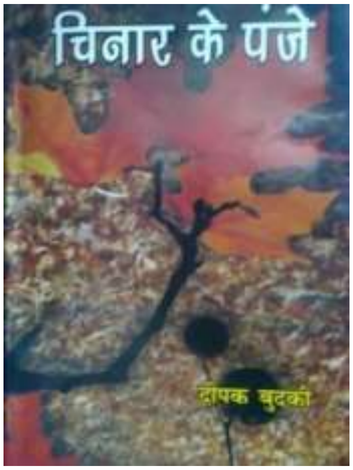

चिनार के पंजे.

(श्री दीपक बुदकी)

चिनार का नाम लेते ही जम्मु-कश्मीर की हसीन वादियों का दृष्य आखों के सामने थिरकने लगता है. ऊँची-नीची पहाडियाँ, पहाडियों के बीच इठलाती-बलखाती बहती झेलम, डल झील, डल झील में तैरती नौकाएँ-सैलानी, देवदार तथा चिनार के छतनार पेड, गुलमर्ग, सोनमर्ग,पहलगाम, पत्निटाप, और अमरनाथ और भी न जाने कितने ही सुहावने मंजरों की याद ताजा हो आती है. कश्मीर के स्वादिष्ट अखरोट की याद आते ही मुँह में रसप्लावित होने लगता है. फ़िर पश्मिना-शाल शरीर को गर्माने लगती है. क्या नहीं है इस जन्नत सी वादियों में ? धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो यहीं पर है-यहीं पर है. दुर्भाग्यशाली हैं वे लोग जो इस धरती पर पसरे स्वर्ग के दर्शनलाभ नहीं उठा पाए.

कहते हैं कि कश्यप ॠषि के नाम पर “कश्मीर” का नाम संस्करण हुआ. प्रख्यात कवि “कल्हण” राजतरंगिनी (1148-1150 ई) में इस बात को उल्लेखित किया है. इसी धरती पर उगा एक छतनार पेड है, जो अपनी शीतल छाँव और सुगन्धित फ़ूलों के लिए हर घर की शान और पहचान बना हुआ है, जिसका नाम “चिनार’ है, इसका वैज्ञानिक नाम पापुलस (POPULUS) है, आज संकट के दौर से गुजर रहा है. आतंकवादियों से निपटने के लिए इस पेड की अंधाधुंद कटाई की जा रही है. सन 1989 से अब तक तीस हजार पेड बेरहमी से काट डाले गए. करीब बारह हजार से ज्यादा पेड सूख गए. देखते ही देखते सारा दृष्य बदल गया और आज स्वर्ग सी इस वसुन्धरा की वादियों में बारुद की गंध भर चुकी है और इसकी धरती गोलियों की गडगडाहट से जब तब कांप-कांप उठती है.

इसी कश्मीर की हसीन वादियों में जन्में श्री दीपक बुदकी (आई.पी.एस.) सेवानिवृत्त, मेम्बर पोस्टल सर्विसिज बोर्ड, नई दिल्ली) का कहानी संग्रह “चिनार के पंजे “सन 2005 में उर्दू में प्रकाशित हुआ जिसे चन्द्रमुखी प्रकाशन, नई दिल्ली ने सन 2011 में हिन्दी में प्रकाशित किया. आपके अब तक “अधूरे चेहरे” उर्दू तथा हिन्दी में क्रमशः 1999 तथा 2005, चिनार के पंजे(2005-2011) , जेबरा क्रासिंग पर खडा आदमी (2007), उर्दू आलोचना “असरी तहरीरें(2006) तथा असरी श’अर (2008) में प्रकाशित हुए . आपने कश्मीर समस्या का उद्‍भव एवं अनुच्छॆद 370-एन.डी.सी. को प्रस्तुत किया गया शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हो चुका है. आपको अनेकानेक संस्थाओं ने सम्मानीत-पुरस्कृत किया है.

आपका एक कहानी संग्रह “अधूरे चेहरे” बाबद समीक्षा आलेख लिखने के लिए मुझे. श्री कृष्णकुमार यादवजी, तत्कालीन डायरेक्टर पोस्टल सर्विसेस कानपुर के सौजन्य से यह प्राप्त हुआ. इसी क्रम में आपका दूसरा कहानी संग्रह “चिनार के पंजे” भी मुझे श्री कृष्णकुमार यादवजी के मार्फ़त ही प्राप्त हुआ, जो वर्तमान में अलाहबाद में पदस्थ हैं. चिनार के पंजे में उन्नीस कहानियाँ हैं, जिसमें कश्मीर के वर्तमान हालातों पर लिखी गईं कहानियाँ - मुखबिर, एक निहत्थे मकान का रेप, चिनार के पंजे, व्यूग, सफ़ेद क्रास, टक शाप, वफ़ादार कुत्ता तथा विभिन्न परिवेशों पर लिखी गई अन्य कहानियों का अनूठा संग्रह है.

“अम्मा” कहानी एक बेबस-बेसहारा महिला के इर्दगिर्द घूमती कहानी है जो अपने उदर-पोषण के लिए शराब बेचती है.. **“मुखबिर”**कहानी में एक ऎसे दंपत्ति “नीलकण्ठ और अरुंधती ”की करुण दास्तां है, जिसका लडका वीरु अमेरिका में बस गया है. वह अपने माता-पिता से बार-बार आग्रह करता है कि वे उसके पास आ जाए. लेकिन मातृभूमि के प्रेम के मोहपाश में जकडॆ युगल जाने का मन नहीं बना पाते. आतंकवादियों ने उनके मकान को चिन्हित कर दिया है ताकि उनका सफ़ाया किया जा सके. निशान देखकर अरणी घबरा उठती है और आशंका-कुशंका के चलते घास के तिनके तो तोडकर और उस पर थूककर फ़डकती आँख पर चिपका लेती है. लेखक ने यहाँ एक टोटके को प्रयुक्त किया है जो अक्सर. अनिष्ट को टालने के लिए सामान्यतया कई जगह प्रयोग में लाया जाता है. आखिरकार यह केवल मन को समझाने का आसान तरीका भर होता है. आखिर वही होता है

जिसकी आशंका मन को मथे डाल रही थी. एक रात आतंकियों ने उन दोनो को भून डाला. कहानीकार ने इस युगल को पहले ही मृत घोषित कर दिया. मेरे मतानुसार उनके जिंदा रहते हुए आतंकी उन्हें घेरते और फ़िर फ़ायरिंग करते, इस दृश्य को और पुरजोर तरीके से लिखा जा सकता था. खैर. अखबारों में खबर प्रकाशित होती है-"हब्बाकदल में मुजाहिदियों ने नीलकण्ठ और अरुंधति नाम के दो मुखबीरों को हलाक कर दिया. उन पर संदेह था कि वे फ़ौज की गुप्तचर एजेंसी के लिए काम कर रहे थे" कहानी कमजोरी के बावजूद भी असरकारक बनी है. **"मोची पिपला**" कहानी में खैरातीलाल चमढेवाली की कहानी है, जो गरीबी से ऊपर उठते हुए अमीर फ़िर एक प्रभावशाली नेता बन जाता है. उसकी लडकी पारो उर्फ़ पार्वती अपने सजातीय लडके से प्यार करती है. शादी भी तय होजाती है, लेकिन नेता बने खैरातीलाल को उस लडके से नफ़रत हो जाती है और वह कई जुल्म ढाता हुआ उसके घर को आग के हवाले कर देता है. "**एक निहत्थे मकान का रेप**" में आतंकियों के डर से मकानमालिक घर के कुंदे में ताला डालकर भाग निकलता है. देखते ही देखते आसपास-पडौस के लोग खिडकी, दरवाजे निकाल कर ले जाते है. बाद में उसमें आग लगा दी जाती है. ताला वहीं जमीन में दब जाता है. क्रिकेट खेलते बच्चे जब अपना स्टंप गाडने की कोशिश करते हैं, तो वह धंस नहीं पाता. हल्की खुदाई के बाद सोने जैसी चमक दीखती है. अतं में पता चलता है कि वह चमकदार वस्तु ताला है. इस कहानी में कश्मीरी शब्द "अडस" को प्रयोग में लाया है, जिसका अर्थ बराबर का हिस्सेदार होना बतलाया गया है. **"मांगे का उजाला**" एक मिलिट्री आफ़िसर की पत्नि को अस्पताल में बच्चा पैदा होता है. बच्चा बदलने की घटना घटती है. अस्पताल में कार्यरत नर्स मीनाक्षी उस अफ़सर के प्रति आसक्त होती है, उस नर्स की शादी तय हो जाती है, बावजूद इसके वह उस अफ़सर से अपने लिए एक बच्चा चाहती है. अपने प्रयास में वह सफ़ल होती है और बच्चे को अपनी माँ को सौंपकर विदेश अपने पति के पास चली जाती है. **"चिनार के पंजे**" कहानी में चिनार के पत्ते के माध्यम से कहानीकार ने कश्मीर के परिवेश को, उसके दर्द को, उसकी पीडा को अभिव्यक्ति दी है. "उम्मीद जिन्दगी की अफ़ीम है"," जो एक बार अपनी मिट्टी से उखड जाता है, दुबारा जड नहीं पकडता. मुसिबतों को सहने के लिए साहस ही पर्याप्त नहीं होता, शक्ति और साधन भी तो होने चाहिए", "आशाएं जिन्दा है, वे भी जिन्दा रहने के लिए नए-नए रस्ते ढूंढ लेंगे", "फ़िर रह जाते हैं फ़ासिल, जो जीवाश्म और पुरावशेष........नस्लों को घसीटते हुए चले जा रहे हैं", "आखिर कब तक हम यूं ही अपने आप से डरते, भागते और छिपते फ़िरेंगे?" जैसे शब्दावलियाँ इस कहानी को जीवन्त और धारदार बनाती है. कहानी **"व्यूग-** व्यूग एक कश्मीरी शब्द है, जिसका अर्थ है "रंगोली" बेलबुटे के लिए "क्रूल "शब्द है जिसका प्रयोग कहानीकार ने किया है. यह सराहनीय प्रयोग है. इससे नए शब्दों से परिचय होता है और पाठक की शब्द संपदा बढती है. "प्रेम में कायरों के लिए कोई स्थान नहीं होता, मगर हम दोनो ही डरपोक थे",ईश्वर ने मूसा को कोहेतूर पर अपने दर्शन दिए थे",जैसे वाक्य इस कहानी को धार देते लगते हैं. कहानी **सफ़ेद क्रास, टकशाप, वफ़ादार कुत्ता** कहानियाँ कश्मीर की व्यथा-कथा, आतंकियों से दहशत पर लिखी गईं मार्मिक कहानियाँ हैं. कहानी **"मूक-अमूक," "प्रतिवाद" और "आओ कुछ और लिखें"** भी अच्छी कहानियाँ बन पडी हैं.

कहानीकार ने अपनी कहानियों के माध्यम से कश्मीर के लोगों की रोजमर्रा की कशमकश, उसमें बिंधी इच्छाएँ, शंकाएँ-कुशंकाएँ, विस्मृतियाँ, विडम्बनाएँ, आतंक, दमन, उत्पीडन, भूख और मृत्यु के बीच जीवन जीने की लालसाओं को गुंफ़ित किया है, और अप्रत्यक्षरुप से यह प्रश्न उठाया है कि जो कुछ भी हमारे चारों ओर निर्लज्जतापूर्वक जो नंगा नाच हो रहा है, क्या उसकी कोई सीमा भी है अथवा नहीं, या यह निरन्तर चलता ही रहेगा? इन मार्मिक दृष्यों से गुजरते हुए मुझे नागार्जुनजी याद आते हैं. इन्ही वेदनाओं से आक्रान्त होकर शायद उन्होंने लिखा था;-

एक- एक पग बिंधा हुआ है दिशा शूल से, डर लगता है बलिवेदी के लाल फ़ूल से* क्रियाहीन चिन्तन का यह कैसा चमत्कार है, दस प्रतिशत आलोक और बस अन्धकार है..

कहानी संग्रह "चिनार के पंजे" की सारी कहानियाँ, कहानीकार के आत्म का पारदर्शी प्रतिरुप है. छल-छद्म और

दिखावेपन के बुनावटों से दूर, लाभ-लोभ वाली आज की खुदगर्ज दुनियाँ में एक सरल-सहज-निर्मल प्रस्तुति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ-बधाइयाँ, इस आशा के साथ कि आने वाले समय में उनके नए संग्रह से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होगा

6

ऐसा भी होता है-

देवी नागरानी (न्युजर्सी-अमेरिका)

प्रकाशक- शिलालेख, 4/32 सुभाष गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032. मूल्य-400/-

लगभग देढ़ सौ साल पहले अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक मैथ्यू आर्नल्ड ने संस्कृति पर विचार करते हुए उस समुन्नत और उदात्त तत्व की तरफ़ संकेत किया था, जो प्रत्येक समाज में चिंतन और ज्ञान की सर्वोत्तम निधि को संजो कर रखता है. यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो आज के संदर्भों में संस्कृति बाजार द्वारा अतिक्रमित सभ्यता की भोगवादी, आक्रमक और नृशंस सत्ताओं के विनाशकारी प्रभाव को शामित करने का सामर्थ्य रखती है. देवी नागरानी के सद्य प्रकाशित कहानी संग्रह " **ऐसा भी होता है** " को पढ़ते हुए हम ज्ञान, चिंतन और संवेदना के आईने में अपने श्रेष्ठ अक्स को प्राप्त कर सकते हैं. तो ठीक दूसरी ओर इस निधि के प्रकाश में अपने लोगों, समाजों और परम्पराओं को परख सकते हैं.

इस कहानी संग्रह में कुल जमा पच्चीस कहानियाँ हैं जो अपनी समय की सीमा रेखा में चलते हुए पाठकों को एक नए परिवेश में ला खड़ा करती हैं. अंक की पहली ही कहानी है **“ ऐसा भी होता है”.** इस कहानी को पढ़ते हुए कलेजा मुँह को हो आता है. कहानीकार ने यहाँ अपने अनुभवों और कहन के कौशल को कुछ इस तरह से गुंफ़ित किया है कि अंदर भीषण हलचल होने लगती है, मन बेचैनी में छटपटाने लगता है, कि आखिर ऐसा क्या हो गया?, जाने कौनसी विपदा आ गई ?, जिससे वह (दादी) देर तक हलाकान और लहुलुहान होती रही थी . कहानी का प्रसंग ही कुछ ऐसा है जो अंदर तक उद्वेलित कर देता है. वे लिखती हैं- वह दिवाली का मनहूस दिन ही तो था ,जो कुछ घंटे पहले उर्मि को गोद में लिए घर से निकले थे. पाँव छूते हुए अभय और सविता ने कहा था- “माँ दो घंटे में लौट आते हैं, आते ही दिवाली की पूजा साथ करेंगे. मिठाई लेकर कुछ दोस्तों से मिल आते है”. “अचानक दरबान खबर आया था, बुरी...हाँ बहुत बुरी खबर. मेरे अभय और सविता के अंत की और उसकी आखरी

निशानी “उर्मिला” को लाकर गोदी में डाल दिया. इसी ग्यारह महीने की उर्मि को पालने-पोसने में दादी को पूरे बाईस बरस लग गए,

बालिग हो चुकी उर्मि का कहीं अता-पता नहीं है वह परेशान-हलाकान होती है. बात भी सच है कि एक जान-जवान लड़की घर से गायब है तो अभिभावक का चिंतित होना स्वभाविक है. मन के किसी कोने में समाया भय,संवादहीनता से उपजा संत्रास जैसी परिस्थितियों के बीच अपने आप को अकेला पाने का बोध, जो पीड़ा की अनेकानेक सरणियों से होकर सघन और घनीभूत हो उठता है. इस बीच फ़ोन का बजना, कट जाना, फ़िर रहस्य पर से हलका सा परदा उठना, पटाक्षेप होने के बाद हकीकत का सामना होता है कि उसकी पोती उर्मि ने सुजान के साथ संपूर्ण धार्मिक रीति-रिवाज के साथ शादी कर ली है. बहन की लड़की का व्याह रहस्यमय ढंग से मामा के करा देने, माँ और बेटी का आपस में समधन बन जाना, भाई, बहन का जमाई बन जाना और लड़की, नानी की बहू बन जाने की प्रथा आंध्रप्रदेश में प्रचलित है. इस विचित्र संबंध में बंध चुकी नानी का आश्चर्यचकित हो जाना स्वभाविक है. जबकि ये रीत कहीं और जगह देखने-सुनने को नहीं मिलती है. मन में प्रश्न उठना स्वभाविक है कि “ ऎसा कैसे हो सकता है?, क्या यह संभव है? “क्या ऎसा भी होता है? क्या यह कुप्रथा नहीं है? जैसे प्रश्न मन में उठना लाजमी है.. हमारे यहां भांजी के पैर छूने और शादी के अवसर पर भांजियों के पैर पखारने की प्रथा प्रचलित है. कहीं-कहीं तो कन्या-दान भी मामा ही करता है. मामा के साथ भांजी का विवाह होना, पता नहीं किस तरह की विचित्र प्रथा है. आज के इस बदलते परिवेश में सब कुछ संभव है. जो कभी सोचा नहीं गया, उसका घट जाना ही, आज की वास्तविकता है जो आश्चर्य पैदा करता है.

कहानी बेमतलब के रिश्ते- यह कहानी भी कुछ इसी तरह की है जो चौंका देती है. क्रिस्टी एक शिक्षिका है. उसकी दो बेटियाँ क्रमशः १७ और १५ साल की है और बेटा बारह साल का है. न्यूयार्क में पली-बढ़ी और तीन बच्चों की क्रिस्टी एक युवक से बिन ब्याहे ही चौथा बच्चा पैदा करना चाहती है. वह न तो उसे एक पति होने का दर्जा देना चाहती है और न ही उस पर आश्रित रहना चाहती है. वह न तो कोई बंधन चाहती है और न ही किसी प्रकार का दखल ही उसे स्वीकार है. अपने ही बनाए हुए चक्रव्यूह में बुरी तरह से उलझी क्रिस्टी, अपनी सहेली रमा से अपने मन की बात उजागर करते हुए सलाह मांगती है कि उसे क्या करना चाहिए? क्या ऎसा किया जाना उचित होगा? भारत में जन्मी रमा यहाँ के संस्कारों और रीति-रिवाजों से भली भांति परिचित है, वह जानती है कि भारत में ऎसा किया जाना संभव नहीं है. अमेरिका की बात ही कुछ और हैं. यहाँ तो लड़कियां कम उम्र में ही गर्भधारण कर लेती है. कभी तो असली बाप कौन है, यह भी ज्ञात नहीं हो पाता. पहले सप्ताह में व्याह और दूसरे में तलाक का हो जाना, यहाँ आम बात है. इसी माहौल में पली-बढ़ी क्रिस्टी, तीन बच्चों के रहते हुए भी चौथा बच्चा पैदा करना चाहती है. अपने जीवन के पैंतीस वसंत देख चुकी क्रिस्टी की सोच अगर कुछ इस तरह की है तो उसके बेटा-बेटी जो जवानी की देहलीज पर कदम रख चुके हैं, निश्चित ही उनकी सोच, अपनी माँ की सोच से दस कदम आगे की ही होगी. वे शायद ही इस बात को बरदाश्त कर पाएंगे. संभव है माँ और बेट-बेटियों के बीच गहरा मतभेद हो जायेगा, जिससे पूरा परिवार ही बिखर जाएगा. रमा नहीं चाहती कि उसकी दोस्त का परिवार छिन्न-भिन्न हो जाए, बिखर जाए. अतः वह उसे उचित सलाह देते हुए कहती है कि इस कृत्य की उसी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है. सभ्यता के अंतर्विरोधों औए द्वंद्वों का बोध एक पुष्ट वैचारिक समझदारी की मांग करता है. अतः कहानी अपने समय की सार्थक और वैचारिकी से जीवंत रिश्ता कायम करती है. सार्थक कहानी में विचार किसी वाद से आक्रांत होकर नहीं आता, बल्कि संवेदना बनकर आता है और प्रसंगतः आता है, रचनाकार की मानवीय प्रतिक्रिया के रूप में.

शिला- एक स्त्री के टूटकर बिखर जाने की कहानी है. अपने कालेज के सहपाठी- चित्रकार समीर को शिला शादी कर लेती है. बाद में यही समीर उसके सुन्दर तन की नग्न तस्वीरें बनाकर वाहवाही लूटता है जो उसे पसंद नहीं. एक पति अपनी पत्नि को कुछ इस तरह से नुमाईश की वस्तु बनाकर उसे सार्वजनिक करता फ़िरे, भला एक स्त्री कैसे स्वीकार कर सकती है? स्वनिर्मित स्वपनलोक के मायाजाल से भरे आसमान में उड़ती शिला शहर छोड़ देती है. आज प्रेम एक निरापद, इकहरी, उपभोग्य वस्तु या

गतिविधि नहीं, बल्कि हालात को देखते हुए जान जोखिम में डालना होता है. प्रेम वैसे भी प्रेमियों के लिए प्राणों का सौदा रहा है, बल्कि एक ज्यादा बड़े अर्थ में आत्महंता की भूमिका को ही पहचाना गया है. **जीने की कला-** एक अदम्य साहस की धनी, नृत्य जगत की मयूरी पूर्णिमा की कहानी है, जो दिल में छेद होने के बावजूद अपनी कला से बेपनाह मोहब्बत करती है. मरन्नासन अवस्था में पहुँचकर भी वह अगले नृत्य के कार्यक्रम को करने के लिए उद्दत हो जाती है**. मैं बड़ी हो गई-** जवानी की देहलीज पर कदम रखती मिनि अपने ही अय्याश और लोलुप पिता की नजरों में चढ़ जाती है और वह उसका सौदा करने से भी नहीं हिचकता. स्वार्थ की सीमाओं को अतिक्रान्त करती यह कहानी पाठक को झझकोर देती है. **ममता-** नशे की आदी हो चुकी माला बिन व्याहे एक बच्चे की मां बन जाती है. अपने नवजात शिशु को देखना और अपना दूध पिलाने की वह जिद करती है, जबकि डाक्टर उसे ऎसा कहते हुए मना कर देता है कि उसके पूरे शरीर में जहर की मात्रा इतनी बढ़ चुकी है कि उससे बच्चे के जीवन को खतरा हो सकता है. भौतिकता की चकाचौंध में ग्रस्त युवक-युवतियों को यह कहानी एक सीख देती है कि लोग अपनी बदहाली और मूर्खताओं पर विचार करें. **जंग जारी है-** क्रान्तिकारी कमलकांत जब जेल से रिहा होकर अपने घर लौटता है तो पाता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसकी पत्नि सरस्वती पर बलात्कार हुआ और वह विक्षिप्त होकर पागलों की तरह सड़क पर घूम रही है. अपने देश की आजादी और खुशहाल लोगों को देखने का सपना पाले कमलकांत को क्या मिला?. भयानक रुप से दरिद्र हो चुके समाज को आईना दिखाती यह कहानी बहुतेरे ज्वलंत प्रश्न छोड़ जाती है. **आखिरी पड़ाव-** महानगरों से चलकर छोटे-छोटे शहरों और जिलों में तेजी से पैर पसार रही एक **महामारी / अपसंस्कृति** जिसको खूबसूरत सा नाम दे दिया गया "वृद्धाश्रम". जहाँ लंगड़े-लूले, अपाहिज, परिवार के बोझ समझे गए लोगों को जबरन लाकर पटक दिया जाता है. एक समय वे कभी परिवार के आश्रयदाता रहे होते हैं, अचानक आश्रयहीन बनकर इन आश्रमों का हिस्सा बन जाने के लिए विवश हो जाते हैं. लेखिका ने स्वयं थाणे की खूबसूरत कालोनी में एक ऎसे ही आश्रम "जिन्दगी का स्वर्ग" नामक वृद्धाश्रम को देखा-भाला और कहानी में ढाल दिया. उनका यह प्रयोग काफ़ी अच्छा लगा कि इस कहानी में उन्होंने कमलेश्वर जी, मैथिलीशरण गुप्त जी के कथन को कहानी का हिस्सा बनाया. साथ ही उन्होंने "इतनी शक्ति हमें देना दाता" गीत के रचयिता श्री अभिलाष जी की कविता को स्थान दिया है. मैं सौभाग्यशाली हूँ कि एक काव्य गोष्ठी में मेरा अभिलाष जी से आत्मीय परिचय हुआ था. **आजादी की कीमत**- एक अपसंस्कृति जो तेजी से महानगरों में अमरबेल की तरह फ़ैल चुकी है, जिसमें इंसान की भावनाओं का कोई महत्व नहीं होता. महत्व होता है मांसल देह का जो नकाब पहनकर / अपनी पहचान छिपाकर स्त्रियों और मर्दों के बीच रंग-रैलियां मनाने के लिए जाना जाने लगा है.

संग्रह में और भी कहानियां हैं जो आपको एक ऎसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती है और सोचने पर विवश कर देती हैं कि "अच्छा ऎसा भी हो सकता है". यदि ऎसा विचार स्वंमेव आता है तो समझिए की कहानी सफ़ल कहानी है. सभी जानते हैं कहानी लेखन एक सघन संशिलष्ट प्रक्रिया है. एक हल्की सी चूक भी उसे ध्वस्त कर सकती है. कहानी के लिए खतरा तब बढ़ जाता है, जब कहानीकार विचारों के अनुभव के आलोक में जाँचें-परखे बगैर केवल ओढ़ लेता है, इसलिए उस पर न तो विवेक की मुहर लग पाती है और न ही संवेदना की या फ़िर कहानी के भीतर जो जीवन बोल रहा है, वहीं कच्चा होता है, अप्रामाणिक होता है या कहानीकार के पास अभिव्यक्ति का सामर्थ्य कम होता है.

सुश्री देवी नागरानी की अभिव्यक्ति का लहजा बहुत गंभीर, संयत और प्रशान्त है. उनमें संवेदना को प्रदर्शन की वस्तु बनाने की अधीरता नहीं, उसके आत्मसातीकरण की कोशिश है. संवेदना उनकी कहानी की सतह पर नहीं मिलती, उसके आभ्यंतरिक प्रकाश-वृत्त में दिखती है. जिस गरिमा, निश्छलता, सौम्यता से वे अपनी बात रखती हैं, उसकी पृष्ठभूमि में उनका मंतव्य होता है-"सादगी अभाव की नहीं / एक संस्कृति की परिभाषा है. मनुष्यता के प्रति निष्ठा और विचारशीलता से समन्वित यह उदात्त सादगी ही उनकी कहानियों की संस्कृति है.

असंभव की संभावना पर इस दौर में ढेर सारी कहानियां लिखीं गईं हैं. सपनों के टूटने की दर्दीली व्यथा-कथा भी इसी दौर में शायद सबसे अधिक और विविध आयामों में कही गई है. सुश्री देवी नागरानी इस नयी संवेदनाधर्मी प्रयोगशीलता से अनभिज्ञ नहीं हैं. हाँ, यह जरुर है कि इनके यहाँ उस दर्द का तथोक्त दुहराव नहीं है. उनकी प्रयोगशीलता समवर्ती कथाकारों से भिन्न कोण पर अपना नया मकाम खोजती हैं.

कहानी संग्रह " ऎसा भी होता है " की कहानियाँ, कहानीकार के आत्म का पारदर्शी प्रतिरुप है. छल-छद्म और दिखावटीपन के बुनावटों से दूर, लाभ-लोभ वाली आज की खुदगर्ज दुनियाँ में एक सरल-सहज-निर्मल प्रस्तुति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ-बधाइयाँ, इस आशा के साथ कि आने वाले समय में उनके नए संग्रह से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होगा

7

पन्द्रह सिंधी कहानियाँ

दो देश और दो भाषाओं के बीच सेतु बनाती कहानियाँ.

(सुश्री देवी नागरानी-न्युनर्सी अमेरिका)

(हिन्दी साहित्य निकेतन,बिजनौर 200/-)

सिंधी, हिन्दी, अंग्रेजी ,मराठी तथा तेलुगु भाषा में निष्नात, कवि, लेखक, कहानीकार, गजलकार, अनुवादक देवी नागरानी (न्यु जर्सी-अमेरिका) द्वारा अनुवादित यह कहानी संग्रह अपने अनुक्रम में छटवाँ है. इससे पूर्व "**और मैं बडी हो गई** (सिंधी से हिन्दी में अनुदित कहानी संग्रह),(२) **बारिश की दुआ** (हिन्दी से अरबी सिंधी में अनुदित कहानी संग्रह), (३) **अपनी धरती** (हिन्दी से अरबी सिंधी में), (४) **सरहद पार की सिंधी कहानियाँ** (हिंदी से अरबी सिंधी कहानियाँ) (५) **भाषायी सौंदर्य की पगडंडियाँ** (सिंधी से हिन्दी में), (६) **अपने ही घर में** (सिंधी से हिन्दी कहानी संग्रह) प्रकाशित हो चुके हैं. आपका सातवाँ पडाव "

पंद्रह सिंधी कहानियाँ " है जिसे हिंदी साहित्य निकेतन बिजनौर ने प्रकाशित किया है. अनुवाद एवं संपादन स्वयं लेखिका ने किया है. आने वाले कल में एक और संग्रह '**दर्द की एक गाथा"** अनूदित कहानी संग्रह प्रकाशित होकर आने वाला है।

शोध दिशा के संपादक एवं हिंदी साहित्य निकेतन के निदेशक**. डा.श्री गिरिराजशरण अग्रवाल जी** ने अपने प्रकाशकीय में लिखा है -" अनुवाद मूल लेखन से कहीं अधिक कठिन कार्य है". यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है. मेरा भी अपना मानना है कि अनुवाद प्रक्रिया "परकाया प्रवेश" जैसा कठिन और दुष्घर्ष कर्म है. जितनी ऊर्जा लेखक को इसमें खपानी पड़ती है, उससे कहीं ज्यादा परिश्रम अनुवादक को करना होता है और यह तभी संभव हो पाता है जब आपका दो भाषाओं पर समान रूप से अधिकार हो. ऎसा होने पर ही कहानी की आत्मा बची रहती है. प्रस्तावना में हैदराबाद (सिंध) के **श्री शौकत हुसैन** शोरो जी के अनुसार सिंधी भाषा की लिपि तैयार करने के लिए **सर बारटिक फ़्रेअर** की कोशिशों से 1953 में सिंधी लिपि तैयार हुई, जो आगे चलकर अरबी-सिंधी लिपि कहलाई जाने लगी. आपने उन तमाम लेखकों के नामों का उल्लेख किया है, जिनके कठिन परिश्रम और लगन से सिंधी भाषा की सरिता प्रवाहित होती रही है. केनेडा से प्रकाशित "हिन्दी चेतना" की संपादिका **सुश्री सुधा ओम ढींगरा** जी ने देवी नागरानी के कलात्मक अनुवाद की प्रशंसा करते हुए कहा है- " अनुवाद करना एक ऎसी कला है, जो सबमें नहीं होती. यह गुण उनमें कूट-कूट कर भरा है और सिंधी भाषा के प्रति उनका समर्पण सराहनीय है". वे लिखती हैं-"मुझे विभिन्न भाषाओं में लिखी कहानियाँ पढने का बहुत शौक है. सिंधी कहानियों से परिचय करवाने के लिए मैं देवी नागरानी को धन्यवाद देती हूँ". मुंबई के के.सी.कालेज की प्राचार्या **कु.मंजू नेचाणी** ने इस संग्रह को "हिंदी साहित्यमाला का एक चमकता मोती" निरुपित किया हैं. प्रख्यात कथाकार **संतोष श्रीवास्तव** कहती हैं-"बेहतरीन सौगात है सरहद पार की कहानियाँ". तेजाबी तेवरों में ओतप्रोत सिन्ध की कहानियों के बारे स्वयं लेखिका ने अपने मन के उद्गार प्रस्तुत किए हैं. एक भाषा के प्रति सच्चा समर्पण और उन्हें अन्य किसी भाषा के माध्यम से, जिन पर उनका अधिकार है, प्रस्तुत करने की बेचैनी- छटपटाहट और बेकली स्पष्ट देखी जा सकती है. इसी का सुपरिणाम है कि सरहद पार की कहानियाँ अपना रास्ता तय करते हुए दूसरे देश यानि भारतवर्ष तक आ पहुँची है. संग्रह के अन्त में रचनाकारों का परिचय प्रकाशित करने की यह पहल सराहनीय है.

देवी नागरानी ने विगत तीन वर्षों से एक मौन साधक की तरह इस पार और उस पार के बीच की लक्ष्मण रेखा को विलीनता के हाशिये पर लाने का सफल प्रयास किया है. मई-जून २००५ में प्रकाशित "समकालीन भारतीय साहित्य" में उन सभी रचनाकारों के नामों का उल्लेख किया गया है, जिन्होंने अन्य भाषाओं में प्रकाशित कहानियों का अनुवाद अपनी भाषा में या अन्य भाषा में किया है..को आधार बनाते हुए यह कहा जा सकता है कि देवी नागरानी देश की पहली अनुवादक है, जिन्होंने सिंधी भाषा में लिखी गई कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया है. वे साधुवाद की पात्र है. अतः उन्हें कोटिशः बधाइयाँ-शुभकामनाएँ.

संग्रह में **शेख अयाज** की पहली कहानी है '**जिन्दा दिली**' -एक ऎसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने प्यार को अंत तक समझ ही नहीं पाता. **सीमेंट की पुतली (रशीदा हिजाब)** धनकुबेरों के चोंचले, शोषण और अत्याचार पर केन्द्रित कहानी है . **"यह ज़हर कोई तो पिएगा (हमीद सिंधी)-** कहानी एक आदर्श शिक्षक के इर्दगिर्द घूमती है, लेकिन उसका बेटा अफ़ीम के व्यापार में संलग्न हो जाता है. मार्मिक कहानी बन पडी है. "**उलझे धागे (नसीम खरल)** की कहानी- समाज में फ़ैलती जा रही विद्रूपता को उजाकर करती है.. "**सूर्योदय से पहले (अमर जलील)** फ़ाकामस्ती और बेरोजगारी में कटते दिनों पर आधारित कहानी है. स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि वह अपनी सगी बहन को भी कोठे में बिठाने की सोचने लगता है. फ़िर उसकी जिन्दगी में एक फ़रिश्ता आता है जो उसे नेकी से पैसा कमाने और खुशहाल जिन्दगी जीने की सलाह देता है. अब वह साइकिल की फ़ैक्टरी में काम करने लगता है. चिकनाई से लदे कपडों और थकान से चूर जब वह फ़ैक्टरी से बाहर निकलता है तो उस फ़रिश्ते को सामने खडा पाता है. मिलते ही फ़रिश्ता कह उठता है कि आज मैं बेहद खुश हूँ. वह पूछता है कि आखिर तुम हो कौन? कहाँ से आते हो, कहाँ गुम हो जाते हो. कुछ न कहते हुए उस फ़रिश्ते ने उसके हृदय के स्थान पर हाथ रखा और देखते ही देखते ओझल हो

गया. श्रम के मूल्य को रेखांकित करती यह कहानी अपने उद्देश्य और रास्ते से भटके नवयुवकों के लिए है**. "घाव" (तारिक अशरफ़)**-यह कहानी भी उन नवयुवकों को सीख देने के लिए है जो मेहनत से किनारा कर जीवन जीना चाहते हैं ."**काला तिल" (गुलाम नबी मुगल)-** अपनी प्रेमिका की कोई बात अथवा कोई निशानी देखकर प्रेमी दीवानगी की हद तक जा पहुंचता है. काला तिल देखकर दीवाना बने गिल्लू को बाद में पता चलता है कि वह तो नकली तिल था .**होंठों पर उडती तितली (शौकत हुसैन शोरो)** - जीवन में कुछ क्षण ऎसे भी आते हैं कि जिसे हम चाहते हैं उसके साथ शादी न होकर किसी और से हो जाती है. लेकिन पहले प्यार की कशिश ताउम्र बनी रहती है. एक शादी शुदा व्यक्ति अब्बास अली अब भी अपने उसी प्यार को लेकर सपने बुनता रहता है. उसका ध्यान आते ही उसके होंठों पर खुशी की तितली उड़ने लगती है. **बीमार आकांक्षाओं की खोज (मुश्ताक अहमद शोरो)-** मन की गहराई तक धंसा डर आदमी को इतना निकम्मा कर देता है कि वह अपनी लडाई खुद नहीं लड सकता. डरा-सहमा आदमी फ़िर एकाकी जीवन जीने लगता है..यह कहानी उन लोगों की प्रेरणा बन सकती है, जो डर से ग्रसित हैं**. हृदय कच्चे रेशे सा (मदद अली सिन्धी)-** इस संग्रह की सबसे लम्बी और मार्मिक कहानी है जो पाठक को अंत तक बांधे रहती है. इस कहानी के केन्द्र में एक ऎसी खूबसूरत युवती की कहानी है, जो महलों में रहती है. धन-दौलत के कमी नहीं है उसके पास, लेकिन पति की उपेक्षा और प्रताड़ना से वह टूट जाती है और नीरस-उबाऊ जिन्दगी जीने लगती है. अच्छी कहानी बन पडी है. **मजाक (हलीम बरोही)**-शादी से पहले लंदन में रहते हुए उसने "फ़ेमिली प्लानिंग" को जिंदा रखने के लिए आपरेशन करवा लिया था. लेकिन आदत के मुताबिक भूल गया.और अपने पत्नि को बता नहीं पाया कि वह कभी बाप नहीं बन पाएगा. पति-पत्नि आपस में खूब मजाक करते हैं और खिलखिला कर हँस पडते हैं, उसी हँसी के बीच वह आपरेशन की बात बताता है. कुछ देर तक तो पत्नि खामोशी ओढे रहती है फ़िर ठहाका मारकर हँस पडती है. शायद उस गम को भुला देने के लिए या फ़िर परिस्थिति से समझौता करने के लिए. **किस-किसको खामोश करोगे? (नसीम थेबो)-** खुद्दार और देशभक्त सोढा को पहले जेल और फ़िर फ़ांसी हो जाती है क्योंकि अन्याय के आगे उसने कभी झुकना नहीं सीखा था. **अलगाव की अग्नि (राजन मंगरियो)-** अपने पति की अनुपस्थिति में किसी गैर मर्द के साथ हम बिस्तर होना, शादी से पहले अथवा मंगनी के बाद शारीरिक संबंध बना लेना आज के तथाकथित सभ्य समाज में एक फ़ैशन सा बन गया है. परिणाम इसके घातक ही सिद्ध होते आए हैं,लेकिन सब चलता है कि तर्ज पर चलते हुए ऎसे लोगों को पूरी जिन्दगी पश्चाताप की अग्नि में जलते रहना पडता है समाज में आए इस बडॆ बदलाव को रेखांकित करती यह कहानी प्रभाव छॊडती है. **"जडों से उखडॆ" (अनवर शेख)–**विश्वास कब अविश्वास में बदल जाएगा, कोई नहीं जानता. इसी तरह अमानत, कब खयानत में तब्दील हो जाएगी, कहा नहीं जा सकता. इसी विश्वास और अविश्वास पर लिखी गई रोचक कहानी है.

इन कहानियों को पढते हुए मुझे यहाँ और वहाँ की आम जिन्दगी में रोजमर्रा की कशमकश, इच्छाएं, आकांक्षाएं, स्मृतियाँ, विस्मृतियाँ, विस्मय, विडम्बनाएँ और वकृताएँ आदि देखने को मिलती है..जिस दुख और संताप को हम यहाँ महसूस करते हैं, ठीक उसी तरह समूची धरती पर आदम जात के मन में उन्हीं भावनाओं की कश्मकश दिखलायी देती है. कहानियों के पात्र और स्थान भले ही अलग-अलग हों, लेकिन वास्तविकताएँ लगभग एक जैसी ही होती है. शायद यही कारण है कि मुझे बार-बार निदा फ़ाजली साहब की गजल याद हो आती है. वे लिखते हैं---

इन्सान में हैवान, यहाँ भी हैं वहाँ भी,*अल्लाह निगहबान यहाँ भी है, वहाँ भी है
खूँखार दरिंदों के फ़कत नाम अलग है*शहरों में बयाबान, यहाँ भी है, वहाँ भी है
रहमान की कुदरत हो,या भगवान की मूरत,* हर खेल का मैदान,यहाँ भी है वहाँ भी
हिंदू भी मजे में है, मुस्लमाँ भी मजे में है,* इन्सान परेशान,यहाँ भी है, वहाँ भी है
उठता है दिलोजाँ से धुआँ दोनों तरफ़ ही* ये मीर का दीवान,यहाँ भी है,वहाँ भी है.

आज दुनिया के हर कोने से, यहाँ तक कि चांद-सितारों से भी सूचनाएँ हम तक आ रही है. इनकी सतह पर सत्ता की बंजर पर्त है, लेकिन इस बंजर पर्त को खुरचकर इन सूचनाओं में अनुभूति की रागात्मक ऊर्जा को रोपना, आज कहानीकार का अपना दायित्व है. आज जहाँ-जहाँ कहानी ने सूचनाओं को जीवंतता प्रदान कर उन्हें अनुभव में रूपान्तरित करने में सफ़लता प्राप्त की है, वहाँ-वहाँ उसने अपनी अनुभूति के संसार में अभूतपूर्व विस्तार किया है.

प्रकृति का अंग मनुष्य ही है किन्तु वह प्रकृति का एक ऐसा अंग है जो चेतना संपन्न है, आत्म सजग है. इसी आत्म चेतना और सजगता के बल पर देवी नागरानी ने दो विभिन्न भाषाओं के मध्य एक सेतु का निर्माण किया है, एक ऐसे पुल की निर्मिति जो एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के बीच परस्पर संप्रेषण और सौहार्द का माध्यम बनता है. अपने छोटे-छोटे निजी दुःखों के बीच रहते हुए अपनी कहानियों का सफ़रनामा लिखने को उत्सुक देवी नागरानी की कहानियों में उनका आत्मगत संसार बार-बार व्यक्त होता है. असंभव की संभावनाओं पर इस दौर में उन्होंने काफ़ी कुछ लिखा है जो एक नयी समझ देता है.

“पंद्रह सिंधी कहानियाँ” की सारी कहानियाँ, कहानीकार के आत्म का पारदर्शी प्रतिरुप है. छल-छद्म और दिखावेपन के बुनावटों से दूर, लाभ-लोभ वाली आज की खुदगर्ज दुनियाँ में एक सहज-सरल-निर्मल प्रस्तुति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ, इस आशा के साथ कि आने वाले समय में उनके नए संग्रह से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होगा।

समीक्षा-आलेख

8 लौ दर्दे-दिल की (गजल संग्रह)-

देवी नागरानी

इन दो-ढाई दशकों में कितना बदल गया है आज का आदमी?.उसकी मनुष्योचित सादगी, निश्छलता, शालीनता, विनम्रता, आदि गुणों का तेजी से क्षरण हुआ है. टुच्चागिरी,कमीनगी जैसे उसके आचरण के अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं. व्यक्तिगत लाभ-लोभ ने उसे लगभग अंधा ही बना दिया है. अब वह वही देखना-सुनना पसंद करता है, जिसमें उसका अपना नीजि स्वार्थ छिपा होता है. दया-ममता-करुणा जैसे अर्थवान शब्द, अब उसके लिए कोई माने नहीं रखते. अनीति से पैसा कमाने की अंधी दौड में उसके पारिवार की दीवार में दरारें पडने लगी है.

रही सही कसर बाजारवाद ने पूरी कर दी है बाजार मानव का महत्वपूर्ण हिस्सा है. बाजार में शामिल व्यक्ति खरीदारी अथवा बिक्री, दोनों ही सूरत में मुनाफ़े की सोचता है.वर्तमानकाल में भूमंडलीकरण के दौर में बाजार अल्पसंख्यक धनिकों के आधार पर शान से चल रहा है. चारों तरफ़ हाहाकार के शोर सुनाई दे रहे हैं ,लेकिन उनकी सुनने वाला कोई नहीं है.

साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता हेराल्ड पिटर ने अपने भाषण मे इस संकट की ओर इशारा करते हुए कहा था-"राजनीतिकों की रुचि, उपलब्ध प्रमाणॊं के अनुसार सत्य में नहीं होती,बल्कि सत्ता में और उस सत्ता के बरकरार रखने में होती है. उस सत्ता को बनाए रखने के लिए यह जरुरी है कि लोग अज्ञान में पडॆ रहें,कि वे सचाई के अज्ञान में ही जिएं,जहाँ तक की अपने जीवन की सचाई तक के."

संकट के इस भयावह दौर में गजलकारा देवी नागरानी का गजल संग्रह" लौ दर्दे-दिल की" का आना इस बात का गवाह है कि उन्हें अपने आसपास के माहौल से बेखबर नहीं है. उन्हें बराबर इस बात की चिंता सताती है. वर्तमान के हालात पर वे लिखती हैं-

"ये दुनिया है घबराई महंगी दरों से/ परेशां है उस पर वो बढते करों से."
"वक्त की रफ़्तार देखो-आदमी बेजार देखो "
"उन बेघरों पे मुसीबत सी आ गई-धूप उनको जेठ की तिल-तिल जला गई"
"कुछ ऎसे मोड आए थे अरमाँ के शहर में-खुद से ही जूझ-जूझ कर लडना पडा मुझे".

देवी नागरानी जी की गजले पाठकों को ऎसे भावालोक में ले जाती हैं, जहाँ पहुँचकर उनकी गजलें अपनी न होकर पाठकों की हो जाती है. वे अपना रचना-संसार और संवेदनाओं को, विराट फ़लक पर यथार्थ से जोड देती हैं. यह तभी संभव हो पाता है, जब गजलकार प्रकृति से प्यार करता हो, प्रकृति में अपने प्रिय को देखता हो, प्रकृति को स्वयं के भीतर देखता हो और उसी में गुम हो जाता हो. शायद इसी खो जाने का नाम ही तो गजल है.
प्रकृति को किस तरह से सजाया जा सकता है, उसे किस तरह से खुशनुमा बनाया जा सकता है. इस पर वे सीख देती हुई कहती हैं

" आज आकाश अच्छाइयों का नया/भूलकर हर बुराई उसे तू सजा" " दुख के बादल बरस कर बने शबनबी/मुस्कुराहट की होंठों पे लाली लगा."

नागरानीजी की गजलों को सरलता से आत्मसात होते हुए महसूस किया जा सकता है, जैसे हवा की छुअन को महसूस किया जा सकता है. वे बडी ही कुशलता के साथ उन छॊटॆ-छॊटॆ शब्दों में, इतनी गहरी समझ पिरों देती है कि असंभव भी संभव में ढल जाता है. गजलों को बेहतर से बेहतर बनाने का वह तत्व जो जीवन कहलाता है, हमेशा उपस्थित बना रहता है. आपकी गजलों में जीवन का सौंदर्य और असीम संभावना के अनन्त स्त्रोत भी प्रस्फ़ुटित होते हैं.

गजल काव्य की वह जमीन है-जहाँ हिन्दी उर्दू हो जाती है और उर्दू हिन्दी. आज गजल हिन्दी में ही नहीं अपितु अन्य भारतीय भाषाओं में भी कही जा रही है. यहाँ तक अंग्रेजी भाषा में भी गजलें लिखी जा रही है. इंगलैंड के ब्रियान हेनरी, डेनियल हाल, और शेरोन ब्रियान ने अंग्रेजी में गजलें लिखी है. संभव है कि आपकी गजलों का रुपान्तरण अंग्रेजी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी होने लगेगा. यदि ऎसा होता है तो यह सुखद संयोग होगा.

भारतीय अस्मिता के साहित्यकार गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि साहित्य का उद्देश्य मानव है. इस कथन का तात्पर्य यह है कि साहित्यकार चाहे वह जिस चीज का चित्रण करे, वहाँ जिन्दगी होगी. जिन्दगी का होना ही मनुष्य का होना है.

प्रसिद्ध साहित्यकार टी.एस.इलियट ने एक जगह लिखा है कि साहित्यकार जो भी लिखता है, वह अपने समय को ही लिख रहा होता है. बिना समय को जाने-समझे बगैर कोई गीत-कविता अथवा गजल नहीं लिखी जा सकती.

जिगर हों-फ़िराक हों-शमशेर हों या फ़िर दुष्यंत की भाषा हो, वह हमारी परम्परा की भाषा है. इसी परिवेश की बीच की भाषा को गढने का काम देवी नागरनी ने बडी खूबी के साथ किया है. शायद यही कारण है कि उनकी गजलों मे एक विशेष प्रकार की बेचैनी-ताप-उर्जा, भाषा और शिल्प का जो प्रयोग हम देखते हैं, उसमें लयात्मकता के साथ-साथ संप्रेषनीयता भी होती है.

निःसंदेह गजलकारा के, अपने भीतर के कवि ने, यथार्थ और स्वपन के बीच पुल बनाने की कोशिशें की हैं.

गजल संग्रह में कुल एक सैकडा गजले हैं. सभी अपने -अपने तेवर और बांकपन के साथ मौजूद हैं. आपका यह आठवां संग्रह है. इससे पहले सात संग्रह प्रकाशित होकर आ चुके हैं, जिसमें चार सिधीं भाषा मं (जिसमें एक भजन संग्रह है),हिन्दी की जमीन पर लिखा जाने वाला यह गजल संग्रह तीसरा है. इससे पहले दो संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. आपका अंग्रेजी भाषा में एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुआ है. तथा आप देश में ही नही वरन विदेशों में भी सम्मानीत हो चुकी हैं,यह गौरव का विषय है.

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस गजल संग्रह का पुरजोर स्वागत होगा.

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

....

9 तो अंग्रेज क्या बुरे थे

लेखक श्री रविन्द्र बडगैयाँ

इन ढाई-तीन दशकों में कितना बदल गया है आज का आदमी?. उसकी मनोष्योचित सादगी,निश्चलता, शालीनता, विनम्रता आदि गुणों का तेजी से क्षरण हुआ है. टुच्चागिरी, कमीनगी जैसे उसके आचरण के अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं. व्यक्तिगत्र लाभ-लोभ ने उसे लगभग अंधा ही बना दिया है. अब वह वही सोचना-देखना और सुनना पसंद करता है,जिसमें उसका अपना नीजि स्वार्थ छिपा होता है. दया-ममता–करुणा जैसे अर्थवान और मूल्यवान शब्द, अब उसके लिए कोई माने नहीं रखते. अनीति से पैसे कमाने की अंधी दौड में, उसके परिवार में दरार पडने लगी है..ययाति अब अपने बेटों के आगे गिडगिडाकर यौवन नहीं मांगता. उसने वियाग्रा जैसी औषधी की खोज कर ली है. काम-पिपासा इस हद तक बढ गई है कि बाप, जवान बेटियों के शयन-कक्ष में जाने से, न तो उसकी रुह कांपती है और न ही पैर.

रही सही कसर बाजारवाद-तंत्र ने पूरी कर दी है. गली-कूचों में बार संस्कृति कुकरमुत्ते की तरह ऊग आयी हैं. बारगर्ल बिंदास नाच रहीं है. नाचना और पैसे बनाना, उनकी अपनी मजबूरी हो सकती है.,. पिछले दिनों, कुछ ऎसी नृशंस और घिनौनी घटनाएं घटी है,जिसने भीतर के विश्वास की नींव हिलाकर रख दी है. मानवता शर्मसार हो गयी है. दुर्भाग्यवश, इन सबकी जिम्मेदार वही पीढी है, जो नयी पीढी पर अश्लीलता,मूल्यहीनता तथा अकर्मण्यता का आरोप मढती रही है. दुर्भाग्यवश अब बच्चों को घेरा जा रहा है. एक ऎसी पीढी को,जो हमारा-सबका वर्तमान तो है ही,साथ ही हमारा-आपका,सबका भविष्य भी है. एक कोंपल

जो नाजुक है-सुन्दर है-रक्षणीय है तथा शारीरिक-रुप से लडने में असमर्थ भी है,इनका बर्बाद होना माने पूरे ढाँचें का बर्बाद होना है.

संकट के इस भयावहदौर में,युवा व्यंग्यकार श्री रविन्द्र बडगैयाँ का पदार्पण, किसी धूमकेतु की तरह होता है, जिसने अपनी उपस्थिति मात्र से खलबली मचा दी है. उसकी कलम आग उगलती है, उन सबके खिलाफ़, जो समाज के संकटमोचन बनने के बजाय, भस्मासुर बने बैठे हैं. उन तमाम लोगों के प्रति उनका गुस्सा भडकना स्वाभाविक भी है,जो अन्दर कोयले से भी ज्यादा काले है, वे केवल काले ही नहीं है वरन उनके सारे कारनामें भी काले है, पर दिखने में वे हंस के मानिंद सफ़ेदझक दिखलाई पडते हैं. उनका सृजनकर्म उन सबके खिलाफ़ है,जिनकी जिम्मेदारी थी इस देश को सजाने-संवारने की. ,जनता ने अपना विश्वास-मत देकर या कहें आँख बंदकर इस देश की बगडोंर उन्हें सौंप दी थी कि वे योगी कृष्ण की तरह, इस देश के रथ को उन्नति के उस मुकाम तक लेकर जाएंगे, जहां समानता का बोध होगा, कोई न तो ऊँच होगा और न ही नीच. उन तमाम हाथों को काम मिलेगा,जो बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं, उनसब को अपने सर ढंकने के लिए मकान मिलेंगे, जिनकी जिन्दगी झोपडपट्टी के नीचे कट रही है,उन सबको पेट भर रोटी मिलेगी जो भूख से बिलबिला रहे हैं.

साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता हेराल्ड पिंटर ने अपने भाषण में इस संकट की ओंर इशारा करते हुए कहा था कि-" राजनीतिज्ञों की रुचि, उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार, सत्य में नहीं होती,बल्कि सत्ता में और उस सत्ता को बरकरार रखने में होती है. उस सत्ता को बनाए रखने के लिए जरुरी है कि लोग अज्ञान में पडे रहें. वे अज्ञान मे ही जिएं,यहाँ तक कि वे अपने जीवन के सच्चाई तक के."

नागार्जुन ने अपनी कविता में कुछ इस तरह का संकेत दिया था.
"एक-एक पग बिधा हुआ है दिशा-शूल से
डर लगता है बलिवेदी के लाल फ़ूल से
क्रियाहीन चिंतन का कैसा चमत्कार है
दस प्रतिशत आलोक और बस अंधकार है."

प्रख्यात कवि रामनाथ सिंह उर्फ़ अदम गोंडवी ने वर्तमान हालात पर चोट करते हुए लिखा था

काजू भुने प्लेट में, विस्की गिलास में
उतरा है रामराज विधायक निवास मे

पक्के समाजवादी हैं, तस्कर हों या डकैत
इतना असर है ख़ादी के उजले लिबास में
आजादी का वो जश्न मनायें तो किस तरह
जो आ गए फ़ुटपाथ पर घर की तलाश में
(२)आँख पर पट्टी रहे और अक़्ल पर ताला रहे
अपने शाहे-वक़्त का यूँ मर्तबा आला रहे

तालिबे शोहरत हैं कैसे भी मिले मिलती रहे
आए दिन अख़बार में प्रतिभूति घोटाला रहे
एक जनसेवक को दुनिया में अदम क्या चाहिए
चार छ: चमचे रहें माइक रहे माला रहे

युवा व्यंग्यकार श्री रविन्द्र बडगैयाँ ने उन तमाम कवियों/गजलकारों के समानान्तर,चलते हुए अपने संग्रह ''तो अंग्रेज क्या बुरे थे'' में, प्रायः उन्हीं बिंदुओं को छूने का प्रयास करते हुए, अपनी ओजस्वी लेखनी से करारी चोट की है. संग्रह में कुल पच्चीस रचनाएं संग्रहित है, जिनके अपने तेवर हैं, अपने रंग है. उन्होंने पुरजोर तरीके से प्रश्न उठाते हुए अपनी पीडा को स्वर दिए है और भाषा का जामा पहनाया है.

व्यंगकार का रचना संसार, न तो जटिल है और न ही बोझिल. सीदे-सादे शब्दों के माध्यम से उन्होंने अपने लेखनी को व्यंग्य को पैनी धार दी है.

वास्तव में व्यंग्य का मूल और प्राथमिक स्वर प्रतिष्ठान विरोधी होता है. यह निर्विवाद सत्य है कि एक तानाशाह, किस तरह सत्ता के शिखर पर बैठकर, निर्दोष लोगों का जीना दूभर कर देता है, उसी तरह इन सफ़ेदपोशों ने, आज जनता कौ मुहाली-बदहाली की उस गुफ़ा में ला पटका है,जहाँ से निकलने का कोई मार्ग नजर नहीं आता. ऎसा भी नहीं है कि जनता का स्वर मुखर नहीं होता. होता है लेकिन ये लफ़डॆबाज कोई ऎसी चाल चलने में कामयाब हो जाते हैं कि आवाज कहीं दुबककर बैठ जाती है.. आज का सच तो यह भी है कि बाजारवाद ने किस तरह आदमी का वस्तुकरण कर दिया है. धनी लोग चीजों की तरह चमकदार होते जा रहे हैं,जबकि गरीबों को सम्मान, चीजों जितना भी नहीं रह गया है. एक विचित्र किंतु सच बात तो यह है कि इस लूटमार के समर में कोई किसी का सगा नहीं है. युद्ध तो लडॆ जा रहे हैं, लेकिन जनकल्याण की भावना और भलाई के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह गया है. अपना हित साधने के चक्कर में, मुश्किलात इतनी बढ गई है कि शोषित-पीढित जन की फ़रयाद सुनने के लिए, समय न तो जनप्रतिनिधियों के पास है, न विधायक के पास है और न ही मंत्रियों के पास.

व्यंग्यकार रविन्द्रजी ने अपनी बेबाक लेखनी से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार-मिथ्याचारिता और पाखण्डों को उजागर करते हुए यह मंगलकामना की है कि इसका असर इतना व्यापक हो कि समाज में अमन-चैन कायम किया जा सके. फ़िर एक व्यंग्यकार का अपना दायित्व भी होता है कि वह उन सब पर चोट करे,जिन्हें वह गलत अथवा बुरा समझता है.

कांतिकुमार जैन ने इस ओर इशारा करते हुए लिखा है-" एक गंभीर मानवीय-करुणा इन व्यंग्यकारों को उन सबको हिलाने-गिराने और तोडने के लिए बाध्य करती है,जो हमें सांस्कृतिक रुप से खण्डहर का निवासी बनाए हुए है. एक विशाल मलवे के मालिक के रुप में. हम बहुत जी लिए, अब हमें खुली हवा चाहिए"

व्यंग्यकार अपने व्यंग्य द्वारा, जीवन के सीलन भरे बदबूदार कमरे में, खुली हवा का एक झोंका भरने का उद्देश्य लेकर चलता है. यदि वह भ्रष्ट, अनैतिक,मिथ्याचारी और पाखण्डों को न भी बदल पाए तो तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है, वह तो केवल इन लोगों को नैतिक समर्थन देता है जो ईमानदार, नैतिक और रुढिविरोधी हैं."

श्री रविन्द्र के रचना-संसार में प्रवेश करते यह स्पष्ट महसूस होता है कि उन्होंने उन सब की बखिया उखेडी है, जो समाज के लिए अमंगलकारी है. यह भी सिद्दत के साथ महसूस होता है कि वह उर्जा,जो उन्होंने प्राप्त की है वह जीवन और समाज के मुठभेड से अर्जित की हुई अंतर्वस्तु है, और वह उन्हें सस्ती भावुकता से बचने की भी पहल करती है.. एक सजग व्यंग्यकार यह भी अच्छे से जानता है कि विसंगतियों को दूर करने के लिए व्यंग्य से बडा कोई कारगर हथियार हो ही नहीं सकता

श्री बडगैयाजी ने अपने संग्रह का नाम पं.राजेन्द्र राही के सुझाव पर रखा है, ऎसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा भी है. व्यक्ति जब अपने बच्चे का नामकरण संस्कार करने जा रहा होता है, तो वह किसी पंडित की शरण में जाता है. मुझे ऎसा लगता है कि

इस संग्रह को यह नाम न दिया गया होता,तो शायद उतना प्रभावशाली नहीं होता.

हिन्दी के प्रति अटूट निष्ठावान होने और समर्पित होने के नाते मेरे मन में भी अपार पीडा है कि हम ऎसे देश में जीने के लिए अभिशप्त हैं,जिसके दो नाम है. पहला इंडिया और दूसरा भारत. इंडिया वह देश है जिसमें चमकदार लोग-रसूखवाले लोग-तथा धनिक लोगों का निवास है. और दूसरे में वे लोग हैं,जो दबे-कुचले हैं,निरक्षर है,जाहिल हैं,गवांर है,निर्धन है. अमीर लोगों की बोली अंग्रेजी है और निपट देहातियों की,काहिलों की भाषा हिन्दी अथवा ग्रामीण अंचल की कोई बोली. एक देश में दो देश, दो भाषा. ऎसा आपने न तो सुना होगा और न ही देखा होगा. एक ऎसा देश जिसका संविधान भी दो भाषाओं मे रचा गया है.(जिसका निर्माण पहले अंग्रेजी में,बाद में हिन्दी मे लिखा गया.)विश्व का कोई ऎसा देश नहीं है,जिसे दो नामों से जाना जाता हो और जिसकी दो भाषाएं हों. विश्व के किसी देश को इस बात से फ़र्क पडता हो या न पडता हो,लेकिन भारत के रहने वालों को इससे बडा फ़र्क पडता है.,जबकि सत्तातंत्र आज भी नीमबेहोशी में जी रहा है.

हमारे देश में अनेक बुद्धिजीवी, भाषाविद, समाजविद और राजनीतिज्ञ भाषाओं के नाम पर एकता की बात तो करते हैं,लेकिन भाषाओं को राष्ट्रीय विवाद का कारण भी मानते है. उन सभी से मेरा विनम्र प्रश्न है कि इंग्लैण्ड और आयरलैंड की भाषा अंग्रेजी है, ताईवान और चीन की भाषा मंदारिन है, उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया की भाषा कोरियन है, रुस और चेचन्या की भाषा रुसी है, पूर्व और पश्चिम जर्मन की भाषा जर्मन है. फ़िर जितने युध्य ,जितने संघर्ष, जितनी हिंसा इन एक भाषी देश में है, क्या हमारे देश में २३ संवैधानिक राष्ट्रभाषाओं और लगभग १३०० लोक भाषाओं के होते हुए,ऎसा संघर्ष या ऎसी हिंसा कभी हुई? यदि यह भाषाई विवेक हमारे जन के पास न होता तो क्या हिन्दी जो आज सत्तर करोड लोगों की भाषा है,वह जन-भाषा बन पाती? क्या हिन्दी भारतीय अस्मिता की प्रतीक नहीं है? हमारा स्वतंत्रता संघर्ष तो हिन्दी के ही माध्यम से हुआ था. हिन्दी हमारी आजादी की भाषा बनी. राममोहन राय, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, दयानन्द सरस्वती,केशवचन्द्र सेन, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, महात्मा गांधी, सरोजनी नायडू, विनोबा भावे, संस्कृतविद भंडारकर,श्री अरविन्द आदि अनेक महान व्यक्तित्व ऎसे हैं जिन्होंने अहिन्दी भाषा होने के बावजूद, भारतीय स्वतंत्रता की लडाई हिन्दी के माध्यम से लडी. कौमी तराने और मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती, वंदे मातरम और समस्त राष्ट्रीय गीत हिन्दी में गाए.. देश की आजादी का इतिहास ही यदि हिन्दी की अस्मिता का इतिहास रहा है,तो आज हम भारतीय अस्मिता की प्रतीक हिन्दी को क्यों नहीं मानते?क्या हम भूल गए कि वायसराय से मिलने से पहले गांधी ने कहला भेजा था कि वे अंग्रेजी भूल चुके हैं?

द्विभाषा का फ़ार्मुला केवल यह कह कर थोपा गया कि पन्द्रह साल बाद हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा बना दी जाएगी. कितने ही पन्द्रह साल बीत गए, हिन्दी पिछडती चली गई और आज अंग्रेजी शीर्ष पर बनी बैठी है. आज न जाने कितने ही मसलों पर हडताले होती हैं, बहसें होती हैं लेकिन देश की भाषा हिन्दी हो, इस विषय को लेकर न तो जन आदोलन होते हैं और न ही इस बारे में सोचा तक जाता है. जिस देश की अपनी कोई भाषा न हो,उसे गूंगा ही कहा जाना श्रेयस्कर होगा.

चुनाव के मौसम में नेता हमसे हिन्दी में वोट मांगते हैं और जब चुन कर जाते हैं तो फ़र्राटेदार अंग्रेजी बोलते है. उनका राजकाज केवल अंग्रेजी में ही चलता है. संसद में बहस अंग्रेजी में होती है. इन सब बातों के पीछे एक षडयंत्र छिपा है. अंग्रेजी जानने वाले लोग कम हैं. इस तरह वे जनता को गुमराह करने के अपने मकसद में कामयाब हो जाते हैं. बांटॊ और राज करो के सिद्धांत पर चलते हुए काले चमडॆ वाले अंग्रेज, वे सारे हथकंडॆ अपनाए हुए हैं.जिसे कभी अंग्रेजों ने अपना रखा था. यहाँ यह समझना आवश्यक है कि स्वतंत्रता की असली लडाई, गोरी चमडी वालों के विरोध में नहीं थी, वरन उस भाषा के प्रति थी, जिसने लोगो के मनों में लंबी खाइयां खोद रखी थी और हमें आपस में लडाकर राज करने की नीति की पोषक थी. आज के हमारे देश के

कर्णधार तो वही सब कुछ कर रहे हैं जो अंग्रेज किया करते थे. फ़र्क कहाँ आया? पहले गद्दी पर गोरी चमढी वाले काबिज थे, आज वहाँ काली चमढी वाले अंग्रेज शान से बैठे हैं. स्वभाविक रुप से यह प्रश्न उठता है कि यही सब चलते रहना आवश्यक था तो अंग्रेज क्या बुरे थे?

मैं अपनी समिति की ओर से तथा अन्य साहित्यकारों की ओर से श्री रविन्द्र बडगैयाँ जी को धन्यवाद-साधुवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने अपने व्यंग्य-संग्रह के माध्यम से उन औजारों को धार दी है, जो समय की मार झेलते-झेलते तथा षडयंत्र की वजह से बोथरे हो गए थे.

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस संग्रह का पुरजोर स्वागत होगा और लोगों को सोचने-समझने और आगे का रास्ता तय करने में दिशाबोध भी देगा.

....

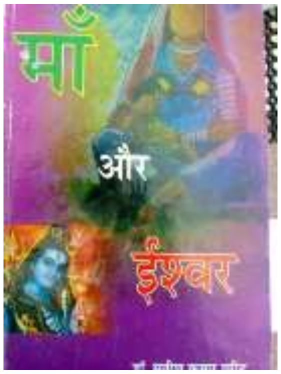

10 माँ और ईश्वर. (सुनील परीट)

बैलहोंगल (बेलगम-कर्नाटक) निवासी डा.श्री.सुनील परीट का काव्य-संग्रह" माँ और ईश्वर" मेरे हाथों में है,जिसे उन्होंने मुझे समीक्षार्थ प्रेषित किया था. इस भेजे जाने और पाने का वाक्या सममुच बडा दिलचस्प है. मैं भीलवाडा(राजस्थान) में आयोजित "अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी सम्मान समारोह" में गया हुआ था. एक दिन दोपहर डा.सुनीलजी का फ़ोन आया. उन्होंने अपना परिचय देते हुए मुझसे इस संग्रह पर समीक्षा लिखने का आग्रह किया. मुझे खुशी हुई कि सुदूर दक्षिण से एक कवि समीक्षा बाबत मुझसे संपर्क कर रहा है. मैंने उनसे कहा कि मैं कोई बडा लेखक अथवा समीक्षक नहीं हूँ, फ़िर आप मुझसे क्यों लिखवाना चाहते हैं? बातों ही बातों में उन्होने यह भी बतलाया कि कोई पत्रिका उनके हाथ में है,जिसमें सिद्दहस्त गजलकारा श्रीमती देवी नागरानीजी के गजल संग्रह "चिरागे दिल"पर मेरा समीक्षा आलेख प्रकाशित है. उसी को पढकर मैं आपसे प्रभावित हुआ और अधिकारपूर्वक अनुरोध कर रहा हूँ कि आप इस पर जरुर लिखें. डा, परिट का आग्रह मैं अस्वीकार न कर सका और उनसे एक प्रति भेजने बाबत कह दिया.

संग्रह देखकर मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि यह "माँ और ईश्वर" को समर्पित है. आश्चर्य होना स्वाभाविक भी था. आश्चर्य इस बात पर कि आज के तथाकथित प्रगतिशील लेखक/कवि ऎसी जहमत नहीं उठाना चाहेगा. स्पष्ट है कि कवि इस दांव-पेंच अनभिज्ञ है.

हर संतान के लिए माँ विशिष्ट होती है. माँ से ही अच्छे-बुरे का ज्ञान, प्यार, और सलीका मिलता है. जीवन के हर कदम पर उसे किस प्रकार चलना है, वह माँ के द्वारा ही सिखाया जाता है. माँ कभी नहीं चाहती कि उसके बच्चे के जीवन में कभी कोई कष्ट आए. बच्चे का सारा कष्ट खुद सहकर वह उसे सुख देना चाहती है. वह सदा यही विचार करती है कि उसका बच्चा श्रेष्ट जीवन जिए और हमेशा खुश रहे. वह अपने शिशुके साथ उसका खिलौना बनकर खेलती है. उसे चलना, बोलना, पढना सब सिखाती है. उसकी नन्ही जरुरतों को बिना कहे समझना माँ का सबसे बडा गुण है. उसके धैर्य की सीमा भी अपार है. उसमें धैर्य, क्षमता, अपनापन, त्याग कूट-कूट कर भरा है. उसका स्थान हमेशा सर्वोच्च रहा है और रहेगा. हमारे समाज में माँ का दर्जा ईश्वर के समान है और यह भी उतना ही सच है कि उसे पैदा करने वाला ईश्वर ही है,बावजूद इसके कि माँ का दर्जा हमेशा ईश्वर से ऊपर माना गया है. यह बात भी उतनी ही कटु सत्य है कि आधुनिकता की चौखट पर माँ की छवि तो वही है पर उसे वह सम्मान और हक नहीं दिया जा रहा है,जिसकी वह हकदार है.

रामायण में एक प्रसंग आता है. रावण का वध हो चुका है. समूची लंका पर अब श्रीराम का अधिकार है. वे अपने अनुज श्री लक्ष्मण से कहते हैं “ **अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते**

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

यह स्वर्णमयी लंका मुझे रुचती नहीं है क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है. यहाँ श्रीराम ने केवल जननी ही नहीं अपितु जन्मभूमि की महानता को भी रेखांकित किया है. यदि वे चाहते तो अपने किसी उत्तराधिकारी को राज्य की बागडोर दे सकते थे,लेकिन वे जानते थे कि लंकापति रावण के बाद उस लंका पर केवल और केवल विभीषण ही सुपात्र और उत्तराधिकारी है. और वे उसका राज्याभिषेक कर देते हैं.

.संग्रह पर लिखने के पहले मुझे बरबस ही अग्रज कवि श्री चन्द्रकांत देवतालेजी तथा अन्य कवियों की रचनाएं ध्यान में आती हैं. देवतालेजी ने स्पष्टरुप से यह घोषणा कर डाली कि वे माँ पर कविता नहीं लिख सकते. मैं साधुवाद देना चाहता हूँ श्रीपरीटजी को कि उन्होंने माँ और ईश्वर पर ग्यारह कविताएँ लिख डालीं. देवतालेजी लिखते हैं

“मैंने धरती पर कविता लिखी है/चन्द्रमा को गिटार में बदला है/समुद्र को शेर की तरह आकाश के पिंजरे में खडा कर दिया/ सूरज पर कभी भी कविता लिख दूंगा/माँ पर नहीं लिख सकता कविता “

मुनव्वर राणा= जब भी कश्ती मेरी सैलाब में आ जाती है/माँ दुआ करती हुई ख्वाब में आ जाती है.

श्री ज्ञानेंद्रपति लिखते हैं=”पूछती है मां कहां है उसका बेटा/घर में नहीं अंटने वाला उसका बेटा.”

मंगलेश डबराल=” घर में मां की कोई तस्वीर नहीं/जब भी तस्वीर खिंचवाने का मौका आता है/मां घर में खोई हुई किसी चीज को ढूंढ रही होती है.

निदा फ़ाजलीजी लिखते हैं=बेसन की सोंधी रोटी पर खट्टी चटनी जैसी मां/याद आती है चौका बासन, चिमटा फ़ुकनी जैसी मां”

राजकुमार केसवानी=”मां होती/ तो / वो तो मां ही होती/ और वही करती/ जो करती थी वो हमेशा.

लीलाधर मण्डलोई लिखते हैं=मैं दौडता हूँ/ तितलियों के पीछे/और सहेजकर/उनके सुन्हरे रंग/छाप देता हूं/मां के आंचल पर/मां की आंखों में/घूम जाती है/जरी वाली/बनारसी साडी की ललक”

टेवेवा जार्डन(लेखिका) लिखती है=मां ऎसी शख्सियत होती है कि पांच लोगों के लिए मिठाई के चार ही टुकडॆ हैं, तो तुरंत साफ़-साफ़ बता देती है कि उसे मिठाई बिल्कुल पसंद नहीं है.

सीनियर फ़िजीशियन श्री ओलिवर वेडॆल होम्स लिखते हैं= जवानी ढल जाती है, इश्क मुरझा जाता है, दोस्ती के पत्ते झड जाते हैं, लेकिन एक मां के दिल में छुपा प्यार सदा हरा-भरा रहता है.

कविता संग्रह में कुल 79 कविताएं संग्रहित हैं, जिन्हें कई वर्गों में बाटा जा सकता है. पहली कविता है=**बस इतनी सी प्रार्थना है**= उजाले की ओर बढना है/रिश्ता-नाता संभालना है/जीवन हमारा संवारना है. इस कविता में कवि का उत्साह और लगन देखने लायक है.वह एक जगह रुकने वाला नहीं है अपितु निरन्तर उजाले की ओर बढना चाहता है. वह एक नदी की तरह बहना चाहता है संग्रह में मां और ईश्वर पर सात कविताएं है. मां पर चार**. मां कविता** लिखते हुए वह कहते है=मां पर क्या लिखूं/एक कवि के तौर पर.....निश्चित ही मां की ममता,दुलार और प्यार को कैसे व्याख्या की जा सकती है. **“बेटी”** कविता पर वे लिखते हैं=रोशनी की अपेक्षा है तो/दीया चाहिए/सौभाग्य की अपेक्षा है तो/बेटी चाहिए”.बेटी बचाओ अभियान की श्रेणी में इसे रखा जा सकता है. इसी क्रम में “**स्त्री”** कविता रखी जा सकती है**. “हे भगवान”** कविता में उन्होंने तंज किया है उन लोगो पर जो अकूत धन के मालिक तो हैं,लेकिन कई कारणॊं से खा नहीं पाते. धन लोलुपों पर यह कविता सटीक बैठती है**. “कल,कल न हो”** आदमी को सचेत करने वाली कविता है वह काव्यधर्मिता से जुडॆ अन्य रचनाकारों से आग्रह करना नहीं चुकता कि जैसा उन्हें दिखाई देता है उसी के अनुरुप रचना लिखी जानी चाहिए. अन्य रचनाएँ भी प्रभावशाली बन पडी है. कुछ कविताएँ अनगढरुप में है,जिन पर मेहनत की जानी चाहिए. कविता अच्छी या बुरी नहीं होती. कविता का गुण ही है कि वह सरलता से अन्दर प्रवेश कर जाती है, समझ में आ जाती है और अपना प्रभाव छॊड जाती है. सृष्टि की सबसे उत्कृष्ट कविता=वह होती है कि जब वह कंठ से फ़ूटती है तो लोग उसे कविता कहते हैं. जब आँखों से झरती है तो आँसू और जब एकतारे से फ़ूटती है तो संगीत और जब वही सत्य हॊंठों से फ़ूटता है तो उसे मुस्कान भी कहते हैं.

कभी किसी रचनाकार ने जगप्रसिद्ध कवि श्री विष्णु खरे से प्रश्न किया था कि “हमारे समय की कविता क्या हो सकती है?’ उनका उत्तर था कि ”कविता उस सीमारेखा के खोज है,जिसके एक तरफ़ अर्थहीन शोर है और दूसरी तरफ़ जड खामोशियाँ. कविता इन दोनो स्थितियों के बीच इतिहास की तमाम विडम्बनाओं और त्रासदियों से गुजरती हुई, तमाम तरह के धोकों, फ़रेबों, प्रपंचों और बदकारियों का सामना करती हुई भरोसे का एक निदान चाहती है और इस बुनियादी सवाल को उठाती है कि यह सब क्यों ?

डा. सुनील परीट की कविताओं में रोजमर्रा की कशमकश, उसमें बिंधी इच्छाएं, आकांक्षाएं,कौतुहल, विस्मय, बेचैनी आदि स्पष्ट देखी जा सकती है.

मातृभाषा कन्नड होते हुए भी आपने एम.ए.,एम.फ़िल, बी.एड,पीएचडी हिन्दी में किया है, यह गौरव का विषय है. अतः मैं उन्हें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,जिला इकाई छिन्दवाडा तथा हिन्दी भवन भोपाल की ओर से आपको साधुवाद देना चाहता हूँ. आशा है कि आप निरन्तर हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए संघर्षरत रहेंगे और नित नया सोपान रचेंगे.

11 सोलह आने सोलह लोग

श्री कृष्णकुमार यादव.(I.P.S.)

समय में से समय चुराते हुए श्रेष्ठ साहित्य लेखन में अग्रणी श्री-कृष्ण कुमार यादवजी

सोलह आने सोलह लोग.

प्रख्यात साहित्यकार एवं कुशल प्रशासक श्री कृष्णकुमार यादव का यह सातवाँ संग्रह "16 आने 16 लोग -इससे पूर्व आपके अन्य संग्रह ,नयी दिल्ली द्वारा किया गया है "हिन्द युग्म" जिसका प्रकाशन "" अभिलाषा"(काव्य(संग्रह-, ""अभिव्य क्ति के बहाने" व "अनुभूतियाँ और विमर्श" (संग्रह-निबंध), " India Post;150 Glorious Years" , "क्रांति;यज्ञ-" 1857-1947 की गाथा" ," जंगल में क्रिकेट" (संग्रह-बालगीत) बढते चरण शिखर की ओर" कृतित्व पर एक पुस्तक-व्यक्तित्व" .प्रकाशित हो चुके हैं (दुर्गाचरण मिश्र.सं)

श्री यादव डाक विभाग में निदेशक जैसे जबाबदार एवं प्रतिष्ठित पद पर आसीन रहते हुए अपने व्यस्ततम समय में से समय को चुराते हुए श्रेष्ठ साहित्यलेखन में निमग्न हैं, यह बात विशेषरुप से उल्लेखनीय है.यह एक ऐसा दुरूह कार्य है जिससे हर कोई बचना चाहता है . वर्तमान में शायद ही कोई ऐसी पत्रकविता आदि प्रकाशित न-आलेख-पत्रिका शेष बची हो जिसमे आप के लेख- होती होअपनी . ओजस्विनी एवं बेबाब लेखनी के लिए आप जाने जाते हैं.

जानने ?ऎसा क्या है .एक चमत्कार पैदा करता है ,शीर्षक कौतुलहल जगाता है "सोलह लोग-सोलह आने" जिसका अभिप्रायः है कि जो ,दरअसल यहाँ सोलह आने का उल्लेख हुआ है .की उत्सुकता पैदा करता है बातें कहीं गई है और निर्विवाद रुप से सौएक समय वह था जब एक रुपये में सोलह .प्रतिशत सही है- ,जिन सोलह प्रख्यात लोगों के बारे में कही गई हैं ,मतलब स्पष्ट है कि जो बातें .आने हुआ करते थे यादव जी ने देश के उन मूर्धन्य विद्वान लोगों का चुनाव कर .वह एकदम सौ प्रतिशत सही हैते हुए अपनी कलम चलाई है ,बल्कि अनेकानेक कष्टों को..उन्होंने न सिर्फ़ अपने जीवन को तपाया है , अपितु दुनिया को वह सब कुछ देने का प्रयास ,न सिर्फ़ समाज को ,कठिनाइयों को सहर्ष झेलते हुए

आपने सोलह जगमगाते नक्षत्रों .जो श्रेष्ठ ही नहीं अपितु सर्वश्रेष्ठ था ,किया है की एक माला तैयार की है जिसमें सर्व श्री रवीन्द्रनाथ जी टैगोरगणेश ,राहुल सांस्कृत्यायन ,अज्ञेय ,प्रेमचंद ,निराला ,नागार्जुन , अहमद ,कैफ़ी आजमी ,कुर्तुल एन हैदर ,अमृता प्रीतम ,मनोहर श्याम जोशी ,कमलेश्वर ,शंकर विध्यार्थी कुंवरनाआयण ,अब्द्दुल रहमान राही ,फ़राजएवं नीरज जी शामिल हैंमुर्धन्य "सोलह लोग" इन . साहित्यकारों बुद्धिजीवियों का चुनाव कर आपने उनकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुअ अपनी / .विद्वतापूर्ण कसी हुई लेखनी का परिचय दिया है

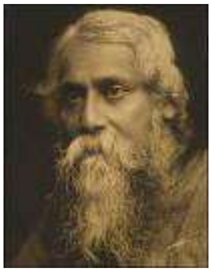

भारतीय आधुनिकता के पहले स्तंभ रवीन्द्रनाथ टैगोर

(7 मई 1861—8 अगस्त 1941).

कविन्द्ररवीन्द्र और उनका विमर्श-

08 वर्ष की उम्र से कविता लिखना शुरु किया. 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त .2011- (द असेंशियल टैगोर प्रकाशित किया" भारती यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर-हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने विश्व

सन 1857 के संग्राम के बाद नए राष्ट्र के निर्माण की जो जद्दोजहद शुरु हुईउसमें स्वतंत्रता प्राप्ति , साथ वर्ण व्यवस्था वाले जटिल मध्ययुगीन समाज के बदलने का -के लिए राजनीतिक संघर्ष के साथ भारत की समृद्ध और अति .सांस्कृतिक संघर्ष -लेकिन सबसे कठिन काम था.संघर्ष भी शामिल था प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा को यूरोप के पुनर्जागरण से निखर कर आए आधुनिक मानवीय विवेक से जोडना चुनौतीपूर्ण काम थाभारतीय साहित्य में उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में केवल और केवल टैगोर . .की कविताएं इस चुनौती से मुठभेड करती दिखाई देती है

रवीन्द्रनाथ के सामने सबसे पहली चुनौती और बडी चुनौती तो भाषा की थीलोकप्रियता के बावजूद .
नोबेल पुरस्कार मिलने के पहले तक उन्हें इस बात के लिए कठोर आलोचना झेलनी पडी थी कि वे
अंततः अति अलंकृत और भावुकतापूर्ण काव्य .फ़ोड कर रहे थे-बांग्ला की साहित्यिक भाषा में काफ़ी तोड
भाषा को जीवन के करीब लाने का श्रेय उन्हें ही प्राप्त हुआ और इसका सकारात्मक प्रभाव हिन्दी सहित
सभी भारतीय भाषाओं पर पडाप्रेम और ,सौंदर्य .इस तरह वे भारतीय आधुनिकता के जनक थे .
इसीलिए वे भारतीय काव्य परंपरा से प्रभावित होकर ,लोकजीवन के सार तत्व को उन्होंने ग्रहण किया
एक नितांतमौलिक और आधुनिक विश्व कवि के रुप में सामने आएसौंदर्य और करुणा का जो ,प्रेम .
.उसकी मिसाल पूरी दुनिया में नहीं है ,उदात्त रुप गीतांजलि के गीतों में है

टैगोर का व्यक्तित्व बहुआयामी है ,उपन्यासकार ,उतने ही बडॆ कथाकार ,वे जितने बडॆ कवि थे .
औ ,नाटककार ,चित्रकारर विचारक थेलेकिन सबसे बढ़कर था शांति निकेतन में शिक्षा का आलोक .
मगर उनके खोए ,टैगोर की कविता व्यथाओं के निवारण का दावा नहीं करतीं .फ़ैलाने का उनका उपक्रम
हुए मुद्दों को वापसी की गवाह बनना चाहती हैं

2 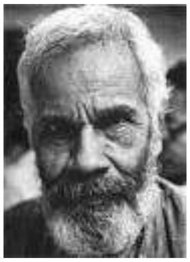 सामाजिक सरोकारों के कविनागार्जुन-

(30 जून 1911—5 नवम्बर 1998(

1930 में .नाम से पहली कविता मैथिली में प्रकाशित ”यात्री“ 32 में अपराजिता देवी से विवाह. 1934-1949
तक घुमन्तू जीवन. 1936 में बौद्ध हुए और नाम धारण किया ”नागार्जुन“ किसान संघर्ष की अगुआई के .
कारण1939 से 1941 तक बार .बार जेल- 1948 में गांधी वध पर लिखी चारों कविताएं जब्त . 1962 में
भारत .चीन सीमा संघर्ष के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी से मतभेद-1968 में मैथिली संग्रह पत्रहीन नग्न “
.साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत ”गाछ1974 में जयप्रकाश आंदोलन में सीधी हिस्सेदारी और जेल
यात्रा. 5 नवम्बर 1998 में महाप्रयाण.

(गोपेश्वर सिंह.प्रो)अपना पक्ष रखने पारदर्शी कवि हैं ,दुविधा के कवि नहीं---नागार्जुन *

(विजेन्द्र नारायण सिंह) नागार्जुन संघर्ष व विद्रोह के कवि हैं*

(शंभुनाथ .प्रो)नागार्जुन के काव्य में जेठ का ताप और पूर्णिमा का सौंदर्य है*

भारतीय* जनता की संपूर्ण मुक्ति के कवि थेउनका स्वपन था कि ऎसे भारत का निर्माण . जहाँ मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की कोई सम्भावना ,करेंगे) नहीं नीरजसिंह.प्रो)

लोकजीवन का इतना विराट और विशाल काव्य कैनवास अगर और किसी लेखक या कवि के * पास हो तो उसे जरुर खोजा जाना चाहिएकेदारनाथ अग्रवाल बांदा और ,त्रिलोचन अवध में जमे हुए हैं . ,बुन्देलखण्ड मेंमुक्तिबोध मालवा से बाहर नहीं निकलते पर नागार्जुन मिथिला से जहरी खाल तक इलाहाबाद चाण्डाल ,भोपाल तक और ऋषि से तांत्रिक तक ,बनारस से विदिशा उज्जैन ,कोलकाता,,दिल्ली, से ब्राह्मण तक .उनका यह व्यापना असाधारण और अपूर्व है .रोटी से ताल मखाने तक व्यापे हैं , इसी अर्थ में वे हमारे समय के महान कवि हैं हिन्दी भवन भोपाल --- विजय बहादुर सिंह.डा) ((द्वारा आयोजित पावस व्याख्यान माला में अध्यक्षीय उद्बोधन

बाबा का भाषा पर गजब का अधिकार हैदेशी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृतनिष्ठ . बांग्ला और ,उन्होंने हिन्दी के अलावा मैथिली .शास्त्रीय पदावली तक उनकी भाषा के अनेक स्तर हैं परम्परा -उनकी कविताओं में कबीर से लेकर धूमिल तक की पूरी हिन्दी काव्य .संस्कृत में बहुत लिखा है एक साथ जीवंत है.उनकी लोकप्रियता का आधार छंदों का सधा हुआ चमत्कारी प्रयोग है .,जो मौके के अनुरूप बडे कलात्मक ढंग से बदल जाया करते हैंइनकी कविताओं का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद . क्योंकि उनकी मानसिकता का प्रभाव पश्चिम से नहीं बल्कि हिन्दुस्था,करना कठिन प्रतीत होता हैन से आता हैबल्कि स्वयं आंदोलनो में सक्रीय रुप से भाग लेकर ,वे तीखे तेवर वाली कविता ही नहीं लिखते . वे अपने समय के संघर्षों से व्यवहारिक .जेल की यात्रा करते हुए आपातकाल का विरोध करते हैं बाबा की कविताएं समाज सापेक .एक सक्रीय योद्धा की तरह ,धरातल पर जुडते हैंष और जनोन्मुखी हैं.शिल्प और भाषा तीनों स्तर पर देशकर इसे समझा जा सकता है ,कविताओं के कथ्य .

3 फ़क्कड कवि थे निराला.

महाप्राण निराला) .21 फ़रवरी 1899—15 अक्टूबर 1961)

छायावाद के सर्वाधिक वैविध्यपूर्ण .महाप्राण कवि निराला मृत्युंजय साहित्यकार थे .* साहित्यकार रहे निराला के काव्य निश्चित तौर पर आत्मा की अमरता के काव्य हैंअत्यंत ऊर्जावान व तेजस्वी होने की . .कि उपाधि दी गई थी "महाप्राण" वजह से उन्हें रघुवंशमणि .डा) (पाठक

उनकी कालजयी कविताएं आज भी जीवन्तता का बोध कराती हैं* (पं(पारसनाथ मिश्र.

महाप्राण के व्यक्तित्व के समक्ष शब्द मौन हो जाते हैं* (जनार्दन राय.डा)

वह स्वयं भूखे रहकर दूसरे का .निरालाजी का जीवन असहायों व दीनहीनों के लिए समर्पित रहता था * पेट भरने वाले महान इन्सान थे (शत्रुघ्न .डा)

प्रेमचन्द का सामाअजिक व साहित्यिक विमर्श

4 प्रेमचंद)31 जुलाई 1880-----8 अक्टुबर 1936(

जिसके पैर में जूते न होपैरों में अष्टधातु की बेडियां किन्तु पहाड चढने का ,देह पर साबूत कपडे न हो , ऎसे दुर्घष लेखक प्रेमचन्द ने उर्दू से होकर हिन्दी,मजबूत इरादा हो कथा-कथा" साहित्य का यात्री- उनके पास .उनका लेखन मील का पत्थर हो गया .कहलाया और अमर कथा लेखक हो गए "सम्राट .कालातीत अंतदृष्टि थी जो कालजयी साहित्य रच सकी

वादकहीं उन्हें मार्कसवादी .कभी उनपर ब्राह्मण विरोधी होने का आरोप लगा .संवाद तो होते ही रहे हैं- घेरे मे ं लेने का प्रयास थालेकिन इससे उन पर कोई फ़र्क नहीं .कभी वे दलित विरोधी नजर आए . वह .समाज में लेखक ऎसी आलोचना या प्रशंसा से जीवित नहीं रहता अपने देहान्त के बाद .पडता अपने लेखन में जनता की चिरंतन चित्तवृत्तियों को सजाने और संप्रेषित कर देने के कारण जीवित रहता है.

हम उनके अवदान कम कैसे कर देंगे जबकि वे वर्षों से भारतीय जनजन में अपने पात्रों के जरिए गहरे - .इनकी रचनाएं साधारणीकृत होने का विशिष्ट गुणधर्म लिए है ,पैठे हुए हैं

5 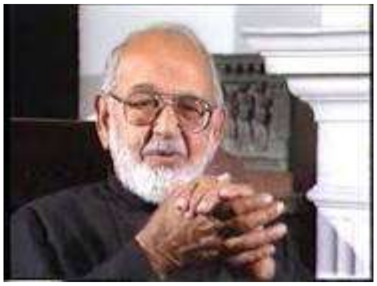 अभिनव प्रयोगों के यायावरअज्ञेय-.

7 मार्च 1911---4 अप्रैल 1987

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ”अज्ञेय“

अज्ञेय को जिन्होंने हिन्दी कविता को एक बार फ़िर सम्भव किया

(विजयदेव नारायण साही)

*आखिर इस बात पर विचार होना चाहिए कि आपके समूचे समाज का असली “
विधायक नहीं ,मंत्री नहीं .लेखक सबसे बडा प्रतिनिधि है समाज का ?प्रतिनिधि है कौनहैवह -
सबसे जबर्दस्त प्रतिनिधियों को ,तो फ़िर समाज अपने सबसे संवेदनशील .जनप्रतिनिधि भले ही कहलाएं
अज्ञेय ने बडॆ दर्द के साथ अपनी ?उस समाज में लेखक होने का क्या मतलब बचता है ,खो चुका है
-डायरी में एक जगह पूछा है“हम कहते हैं कि हमें महान लेखक चाहिएहम ये क्यो ?ं नहीं कहते कि हमे
महान समाज चाहिए.हमें महान समाज बनाना है ताकि महान लेखाक पैदा हो सकें ?” पते की बात है
और हमारे सिर पर चढ के बोलती है ,अगर समाज में उसके कहे ?कहाँ से पैदा हो रहा हैअ लेखक .
जिए के प्रति रत्ती भार भी कोई रुचि नही है तो फ़िर वे कहाँ से प,सुनेैदा होगा?कैसे पैदा होगा ,
हिन्दी ०-रमेशचन्द्र शाहजी .प्रो)- भवन
भोपाल मे आयोजित कार्यक्रम (अध्यक्षीय उद्‌बोधन. के अवसर पर ”अज्ञेयजी की जन्म शताब्दी“

इनके पास अनुभूति की सघनता जितनी गहरी और .वात्स्यायन जी के पास सौंदर्य की अखण्ड दृष्टि है“
प्रशान्त हैकिरण -किरण ,बिन्दु-बिन्दु ,तृण-तृण,अणु-अणु .अभिव्यक्ति उतनी ही तीव्रतर और नव्यतर है ,

में सीमित और आलोडित सौन्दर्य को निसर्ग और मनुष्य के भीतर स्थिर गतिमय सौन्दर्य की अखण्डता .बजती है "असाध्य वीणा" में समर्पित होकर उनकी

श्रीराम पर.डा)िहार(

"अज्ञेय खुद ही रस सिद्ध थे और जब वे सुनाते तो हमारे "असाध्य वीणा" .स्मृति का और श्रुति दोनो का .अंधियारे अंतस में आलोक जगा देते थे

राजेन्द्र .डा)
"उपाध्याय)

*रुप में अज्ञेय के व्य-छायावादोत्तरकाल में आधुनिक भावबोध के प्रवर्तक"क्तित्व के कई पक्ष हमारे सामने आते हैंप्रभावशाली समीक्षक हैं ,वे एक उत्कृष्ट कोटि के मौलिक कृतिकार हैं . और उनके द्वारा आयोजित तथा पुर्स्कृत नये साहित्य का रुप आगामी महत्वपूर्ण सम्भावनाओं कों अज्ञेय उन विरल रचनाकारों में से है जिनका व्यक्तित्.विवृत्त करता हैव कलागत और ऐतिहासिक दोनो ही प्रकार के प्रतिमानों पर खरा उतरता है.वे एक ओर रचनाकार हैं तो दूसरी ओर आयोजक .

(रामस्वरुप चतुर्वेदी)

"अपने जीवन के प्रारम्भ से ही वे जो कुछ थेजेल .अपने समाज को अर्पित थे, पिताज .से छूटकर वे आश्रम खोलना चाहते थेी ने मना कियाचन्दा ,जो कुछ करो खुद कमाकर करो , ,और उन्होंने जो कुछ किया .मांगकर नहीं"प्रतीकअपने को पूरी तरह झोंकर ,आन्दोलन चलाए ,चलाया " आग में

(विद्दयानिवास मिश्र)

शैल ,प्रतिभा संपन्न कवि .महान साहित्यकार अज्ञेय व्यक्तित्व के अनेक पहलू हैं"ीकार , यात्री और ,सफ़क उपन्यासकार,अच्छे संपादक ,ललित निबन्धकार ,नई कहानी के सशक्त हस्ताक्षर आज की हिन्दी कविता पर अज्ञेय .महान अध्यापक ऐसे पहलुओं से अज्ञःएय का व्यक्तित्व समृद्ध है अज्ञेय का काव्यसंसार ही इत .की अद्वितीय काव्यप्रतिभा की गहरी और अमिट छाप हैना विस्तृत है जिसका परामार्श इस आलेख में लेना संभव नहीं

(विजय महादेव गाडे .डा)

श्री अज्ञेय की कविताओं में पिछले कुछ दिनों से एक नवीन आध्यात्मिक अनुभूति का “ जिसे वे बडी ईमानदारी के साथ व्यक्त करने लगे हैं,संचार हो रहा है

आचार्य नंदद)ुलारे वाजपेयी(

वाक्य के व्यक्तित्व का ,शब्द के अस्तित्व का होना है ,अज्ञेय का हिन्दी में होना “ हर स्थिति और हर अनुभव के बीच कुछ ऎसा कहते हैं कि शब्द उनका ,तो वे हर समय .होना है वे .शब्द उनका आचरण हो जाता है .शब्द उनकी अस्मिता हो जाता है ,साहस हो जाता है तो शब्द की अनुपस्थिति करके भी कहना जानते हैं .डा) (.रमेश दवे

“ अज्ञेय अधुनिकता के संवेदन के क्षेत्र में इसलिए ले जाना चाहते हैं क्योंकि आधुनिकता की समूची संरचना संवेदन में ही निर्मित होती है ..जो बाद में जीवन के विविध क्षेत्रों मे रुपायत होती है , आधुनिकता आकस्मिक रुप से घटित नहीं होतीं बल्कि वो संस्कारों को परिवर्तित करके समय के साथ .ऎसा संबंध बनाती है जो विकासोन्मुख होती है

रमेश) (ऋषिकल्प

अज्ञेय बीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य के नवोदय के सूत्रधार हैं कवि और गद्ध्यकार . दोनो रुप में उन्होंने नयी दिशाओं का आविष्कार और परिष्कार किया. (कुमुद शर्मा(

6

सार्वदेशिक दृष्टि एवं घुमक्कडी प्रवृत्ति के महान पुरुष महा पण्डित राहुल सांस्कृत्यायन.

भागो नहीं दुनिया को बदलो

(9अप्रैल1893-----14अप्रैल1963)

*वह किसी एक विचार को पकड़कर रहने वाले नहीं थे। उनके अंदर परिवार का सनातनी संस्कार था।

*विश्व भ्रमण के दौरान उन्हें ज्ञान हुआ कि भागने से काम नहीं चलेगा। 'भागो मत, बदलो' उनकी यह पुस्तक चर्चित है। उन्होंने चिंतन किया कि वह कौन सा विचार और दर्शन है, जिससे दुनियां बदली जा सकती है। इसके लिए उन्हें बुद्ध दर्शन उपयुक्त लगा।

*राहुल जी की खास बात यह थी कि वे पूर्णतया नास्तिक होने के बाद भी दूसरों के विचारों का आदर करते हुए पक्के राष्ट्रवादी थे।

*रांगेय राघव का रचना संसार इतना विस्तृत है कि उनकी तुलना सिर्फ राहुल सांस्कृत्यायन से की जा सकती है। रांगेय राघव की तुलना हिंदी संसार में सिर्फ राहुल जी से की जा सकती (राहुल सांकृत्यायन) है लेकिन उन्हें तो उम्र भी बहुत मिली थी। रांगेय राघव ने मात्र39 साल की उम्र में उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, रिपोर्ताज जैसी विविध विधाओं में करीब 150 कृतियों को अंजाम दिया।'' (राजेन्द्र यादव(

इनके .उन्हें घुमक्कडपन और संघर्षों की जमीन मिली थी.वे एक दार्शनिक के साथ ही चिन्तक भी थे* दुनिया में घूमने के लिए -खोज और सृजन की भूख ने उन्हें हमेशा देश .लिए कोई देश पराया नहीं था वे कभी भूटान गए तो .की यात्रा की ”वोल्गा से गंगा“ .और जमकर लिखा,वे खूब घूमे .प्रोत्साहित किया .तो कभी श्रीलंका और बहुत सारे ग्रंथ खच्चर की पीठ पर लाद कर लाए ,कभी रूस

7 गणेश शंकर विद्धार्थी का अद्‌भुत ”प्रताप“

श्री गणेश शंकर विध्यार्थी (26 अक्टूबर 1890—25 मार्च 1931)

*क्रांतिकारी भगत सिंह सरकार की आंख की किरकिरी थे । क्रांतिकारियों के मन में भी यह भय था कि खूनी और अंग्रेजों की सरकार कब उनको गिरफतार कर फांसी पर लटका दे ।प्रताप के सम्पादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह को अपने समाचार पत्र में कार्य करने हेतु नियुक्ति पत्र दिया जहां उन्होनें सरदार बलवंत सिंह के नाम से वर्षो तक कार्य किया।

*पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी गणेश शंकर विद्यार्थी ऐसे मूर्धन्य व्यक्तित्व थे जिन्होनें स्वच्छ एवं देषभक्ति पूर्ण पत्रकारिता का बीडा उठाया जिसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

*कलम की ताकत हमेशा से ही तलवार से अधिक रही है और ऐसे कई पत्रकार हैं, जिन्होंने अपनी कलम से सत्ता तक की राह बदल दी। गणेशशंकर विद्यार्थी भी ऐसे ही पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी कलम की ताकत से अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी थी।

अभी जिन्दा है कमलेश्वर की क्रांतिधर्मी रचनात्मक बैचेनी

8 श्री कमलेश्वर)6 जनवरी 1932—27 फ़रवरी 2007)

(संस्करण)

*”सारिका के संपादक श्री कमलेश्वरजी का”15 मार्च 1970 को में आगमन ”छिन्दवाडा ”संगायन संस्था“ दामोदर ,संपतराव धरणीधर (.स्व)जिसमें श्री ,पर आधारित था ”कहानी पाठ“ कार्यक्रम. .हुआ था कैलाश सक्सेना आदि कहानीकारों ने बडी संख्या में भाग लिय,हनुमंत मनगटे,सदन ा था.

छिन्दवाडा सन---1978 में अखिल भारतीय समानान्तर लेखक सम्मेलन में आपका आगमन हुआ था . इस .सी हास्टल में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ.एल.दो दिवसीय कार्यक्रम स्थानीय टाउन हाल तथा ई .अभिनन्दन भी किया गया-अवसर पर आपका नागरिक

27 नवम्बर 1978 में छिन्दवाडा के प्रख्यात साहित्यकार स्वमाला में -धरणीधर व्याख्यान.संपतराव.बाबा. लेकिन एक दिन पहले अर्थात .आपने आने की सहमति प्रदान कर दी थी26-11-1978 की रात्रि को आपको दिल का दौरा पडा और स्थानीय बत्रा हास्पिटल में आपको भर्ती कराया गयाइस आशय की . सूचना उनके ड्रायवर श्री नरेन्द्र ने हमें दीलेकिन वक्त को शायद यह .वे तीसरी बार छिन्दवाडा आते . .मंजूर नहीं था --०--

*1995 में कमलेश्वर को 'पद्मभूषण' से नवाज़ा गया और 2003 में उन्हें 'कितने पाकिस्तान'(उपन्यास के (लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे 'सारिका' 'धर्मयुग', 'जागरण' और 'दैनिक भास्कर' जैसे प्रसिद्ध पत्रपत्रिकाओं के संपादक भी रहे। उन्होंने- दूरदर्शनके अतिरिक्त महानिदेशक जैसा

महत्वपूर्ण दायित्व भी निभाया। कमलेश्वर ने अपने 75 साल के जीवन में 12 उपन्यास, 17 कहानी संग्रह, और क़रीब 100 फ़िल्मों की पटकथाएँ लिखीं।

*उन्होंने फिल्मों के लिए पटकथाएँ तो लिखी ही, उनके उपन्यासों पर फिल्में भी बनी। `आंधी', 'मौसम फिल)म(', 'सारा आकाश', 'रजनीगंधा', 'छोटी सी बात', 'मिस्टर नटवरलाल', 'सौतन', 'लैला', 'रामबलराम' की पटकथाएँ उनकी कलम से ही लिखी गईं थीं। लोकप्रिय टीवी सीरियल 'चन्द्रकांता' के अलावा 'दर्पण' और 'एक कहानी' जैसे धारावाहिकों की पटकथा लिखने वाले भी कमलेश्वर ही थे। उन्होंने कई वृतचित्रों और कार्यक्रमों का निर्देशन भी किया।

साहित्य जगत में कमलेश्वर जैसे बहुमुखी .पानी छिन जाने जैसा है-कमलेश्वर का जाना मेरे लिए हवा*
" .और करिश्माई व्यक्तित्व के लोग कम ही हुए हैं(राजेन्द्र यादव(हंस-सं.

*उनकी पहली कहानी 1948 में प्रकाशित हो चुकी थी परंतु 'राजा निरबंसिया' (1957) से वे रातोंरात एक - बड़े कथाकार बन गए। कमलेश्वर ने तीन सौ से ऊपर कहानियाँ लिखी.

कमलेशवरजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी शिक्षा और स्वातंत्र्य संबंधी अपना दृष्टिकोण * प्रस्तुत करते हुए नारी मुक्ति की पहल की.

9 उत्तर आधुनिकतावादी थे मनोहर श्याम जोशी

मनोहर श्याम जोशी)9 अहस्त 1933---30 मार्च 2006)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ट गद्यकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, पत्रकार, दूरदर्शन धारावाहिक लेखक, जनवादीविचारक-, फिल्म पटकथा लेखक-, उच्च कोटि के संपादक, कुशल प्रवक्ता तथा स्तंभलेखक थे। -
-दूरदर्शन के प्रसिद्ध और लोकप्रिय धारावाहिकों' बुनियाद' 'नेताजी कहिन', 'मुंगेरी लाल के हसीं सपने', 'हम लोग' आदि के कारण वे भारत के घरकर्म के भी अच्छे जानकार थे । -घर में प्रसिद्ध हो गए थे। वे रंग-
उन्होंने धारावाहिक और फिल्म लेखन से संबंधित ' पटकथालेखन-' नामक पुस्तक की रचना की है।
दिनमान' और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के संपादक भी रहे।

*भाषा के मामले में उनका कोई मुकाबला नहीं है। बिना जोशी जी को पढ़े कोई भी भारतीय संस्कृति और साहित्य को नहीं समझ सकता। जोशी हमेशा खुद से संवाद करते थे, जो अपने आप में अनूठा और

सृजनात्मक था। (मृदुला गर्ग(

*"इस समय हमने जो कुछ भी लिखा हैमरने के पहले संतोष वाला कुछ लिखना .उसमें संतोष नहीं है , (चाहता हूँ मनोहर श्याम जोशी(

*-''मैं विद्वान नहीं हूँ। मेरी विद्वता मात्र पत्रकारिता के स्तर की है। थोड़ा यह भी सूँघ लिया, थोड़ा वह भी सूँघ लिया। मैं तो प्रिन्ट मीडिया का आदमी हूँ।'' (मनोहर श्याम जोशी('

इस नए लेखक की खोज से मुझे इतनी खुशी हुई है, जितनी कि फैजाबाद में पुरानी अयोध्या के अवशेष मिलने से।'' (अमृतलाल नागर(

*'वस्तुतः जिन चीजों को लेकर हम निकले थे वह तो इस सदी में हुई नहीं। अगली सदी में क्या होगा हमें समझ में नहीं आता?' ' मनोहर) (श्याम जोशी

कभी कभी उनकी साफ़गोई एवं यथार्थ को उसी कटू रुप में परोसने के चलते कई आलोचकों ने- "सिनिस्सिज्म"(मूल्यहीनताजैसे आरो (पों से भी उन्हें नवाजा पर आख्यान -जैसे संवेदनशील प्रेम "कसप" के लेखक पर यह आरोप लगाना स्वयं में ,तीन श्रेष्ठ उपन्यासों में होता है-जिसका शुमार हिन्दी के दो .विरोधाभास लगता है

झिन्हें पढकर हमारी पीढी साहित्य में तैयार हुई है और ,वे हमारे समय के नायक हैं* हमारे बाद की पीढी भी (सूरज पालीवाल)

Death can conquer a life that too in worldly sense but not the essences of life" जो कमलेश्वर जी अपने शब्दों के रुप में छोड गए हैं और जिस तरह शब्द अमर हैंउसी तरह कमलेश्वर भी और उनकी . उपस्थिति भी हमारे बीच है और भी मुखरता के साथ और भी प्रखरता के साथ (केशव)

उनका यह प्यार किसी .एक भाई का प्यार है .अपनापन है.मेरे लिए उनके पत्र उनका अपार स्नेह है " –मीठे फ़लदार और छायादार वृक्ष की तरह था जिसकी छांव में बैठकर हमेशा बहुत चैन और सुख मिला अन्यथा आज की साहित्यिक ग्लोबल वार्मिंग के जमाने में हम जैसे साहित्य में नएअपढ व्यक्तियों को - .कौन इतना स्नेह देता है

(हरनोट.आर.एस)

10 साहित्य की अनुपम दीपशिखाअमृता प्रीतम;

अमृता प्रीतम)31 अगस्त 1919---31 अक्टूबर 2005)

यह अमृता प्रीतम हैकि ,अपनी तरह की कलम ,सी से राह न मांगती हुईकिसी के कंधे पर हाथ न , .आप कह देंगे कि यह अमृता प्रीतम है-उसकी कोई रचना उठा कीजिए .स्वाधीन,धरती हुई

(प्रभाकर श्रोत्रिय)

एक बहुमुखी प्रतिभा से भरीविस्तृत फ़लक की मार्मिक सर्जक के उठ जाने का गम पाठक ,संवेदनशील , और लेखक समाज को सालता रहेगाउन्हें मौलिक .वे जितनी पंजाबी की थीं उतनी ही हिन्दी की थीं . देह में इस वक्त भी -वे अपनी रचना .लेखक की तरह हिन्दी पाठक ने पढा और उनसे अभिभूत हुआ मौजूद हैं (प्रभाकर श्रोत्रिय)

अन्त में इतना ही कि वे बीसवीं सदी की पंजाबी की महान कवियित्र“ीजो तब तक याद की ,थीं” .जब तक पंजाबी काव्य रह पायेगा ,जाएंगी

(गुरुदयाल सिंह)

अमृता नहीं रहीं खबर ने यूँ आक्रान्त किया गोया मेरी पसलियों पर किसी ने हतौडे की चोट कर दी हो...

(अजीत कौर)

ये 1957 के अन्तिम दिन थेअमृता के..... कहानी ,डिजाईन बनाना था-का कवर ”आखिरी खत“ संग्रह- .एक सांझे दोस्त ने मुझे इस काम के लिए अमृता से मिला दिया .अमृता आर्टिस्ट की तलाश कर रही थी धीरे यह वाकफ़ियत दोस्ती -और धीरे .कवर०डिजाईन भी बन गया और अमृता से मेरी वाकफ़ियत भी चलते हमसफ़र-और दोस्त चलते .बनने लगीबन गई

(इमरोज)

अमृता खुद भी खूबसूरत हैअमृता .उसने मेरी जिन्दगी भी खूबसूरत बना दी...ख्याल की भी खूबसूरत थी , मेरी सोच से .मैं लफ़्जों में बता नहीं सकूँगा कि उसने मुझसे कितना प्यार किया है -प्यार ही प्यार है .....भी कहीं ज्यादा इम)रोज(

अमृता प्रीतम एक हसीन अऔरत थींउससे भी ज्यादा हसीन साहित्यकार .

(कर्त्तारसिंह दुग्गल (

जितनी सदियाँ पंजाबी नारी लोक गीतों की ओट में छिपकर अपना दुःख सुख बेनाम रुप से गाती रहीं . ओडक बीसवीं शताब्दी में अमृता प्रीतम का चेहरा पंजाबउफ़क पर उदय हुआआमृता से पहले पीरो . और हरनाम कौर का भी नाम लिया जाता है पर उनकी रचनाएँ अपनी संभावनाओं की संपूर्णता तक नहीं पहुँचतीं (सुरजीत पातर)

अमृता प्रीतम पंजाबी साहित्य की एक ऎसी शख्शियत रहींजिन्होंने राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर , ख्याति हासिल कीं.

(करमजीत सिंह)

एक ऎसा विकास या गति अमृता की कविता में दृष्टिगोचर होता हैजबकि उसके गलपा में बहुत ज्यादा , इसलिए अमृता .बाल्कि उसके पहले के कुछ उपन्यास अधिक प्रभावशाली हैं ,विकास नजर नहीम आता के बारे में भविष्य में भीऊ भी विशेष चर्चा कविता के आधार पर ही होगी

(सुतिन्द्रसिंह कौर)

आज अमृता प्रीतम होने का अर्थ हैकी बहुलार्थक "शब्दार्थ" नरी यातना के इतिहास का विखण्डन और.... .सांस्कृतिक गरिमा की पुनर्प्रतिष्ठा

(कृष्णदत्त पालीवाल(

अमृता अन्तिम वर्षों तक तक बहुत सक्रीय होकर लिखती रहींलेखिकाओं -पंजाबी के युवा पीढी के लेखक . लगभग पांच दशकों तक उनकी छाया बनकर लिए .के लिए उनका घर किसी तीर्थ से काम नहीम था इमरोज किसी समर्पित साथी के जीवन्त उदाहरण हैं

(महीप सिंह)

11) 20जनवरी 1927—20 अगस्त 2007)

साझी विरासत की कडी थीं कुर्रतुल ऎन हैदर .

* [मोहम्मद अली जिन्ना] ने हिन्दुस्तान के साढ़े चार हज़ार सालों की तारीख़ में से मुसलमानों (इतिहास) सालों की तारीख़ को अलग करके पाकिस्तान बनाया था। कुर्रतुल ऎन हैदर ने नॉवल १२०० के'आग़ का दरिया' लिख कर उन अलग किए गए १२०० सालों को हिन्दुस्तान में जोड़ कर हिन्दुस्तान को फिर से एक कर दिया।

(निदा फ़ाजली(

12 हरफ़नमौला की कैफ़ियत ”कैफ़ी“

कैफ़े आजमी उर्फ़ अतहर हुसैन रिजवी)19 जनवरी 1919---10 मई 2002)

*उत्तरप्रदेश सरकार ने सुल्तानपुर से फूलपुर सड़क को कैफी मार्ग घोषित किया है। दस मई 2002 को कैफी यह गुनगुनाते हुए इस दुनिया से चल दिए : ये दुनिया, ये महफिल मेरे काम की नहीं।...

*कैफी की भावुक, रोमांटिक और प्रभावी लेखनी से प्रगति के रास्ते खुलते गए और वे सिर्फ गीतकार ही नहीं बल्कि पटकथाकार के रूप में भी स्थापित हो गए। ‘हीररांझा-’ कैफी की सिनेमाई कविता कही जा सकती है। सादगीपूर्ण व्यक्तित्व वाले कैफी बेहद हँसमुख थे, यह बहुत कम लोग जानते हैं।

*हिन्दी फिल्मों के लिए भी कई प्रसिद्ध गीत व ग़ज़लें भी लिखीं, जिनमें देशभक्ति का अमर गीत कर चले हम फिदा"-, जानभी "तन साथियों-ओ- शामिल है।

*वे समाजवादी विचारधारा के पक्के समर्थक थे और उनकी रचनाओं में मज़लूमों का दर्द पूरी शिद्दत से उभर कर सामने आता है।

13 फ़राज आओ सितारे सफ़र के देखते हैं

अहमद फ़राज (14जनवरी 1931—25 अगस्त 2008)

*फ़राज हमेशा से तानाशाहों के विरुद्ध और लोकतंत्र के हिमायती रहेजनरल जिया का विरोध करने . की वजह से उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड और कुछ सालों के लिए वे निर्वासित भी हुए

(खालिद हसन(पत्रकार-

प्रेम को जिस *(इफ़्तिखार अली).वे कालेज के जमाने में एक आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक थे * शिद्दत के साथ उन्होंने अपनी शायरी का विषय बनाया उसकी मिसाल मिलना मुश्किल हैफ़राज *. किशोरावस्था में कश्मीर के47-48 के युद्ध में स्वेच्छा से सम्मिलित हुए थे.

14 कश्मीर की सूफ़ी परम्परा का ”राही“

अब्दुल रहमान राही).16 मई 1925)

पत्रकार और आलोचक श्री अब्दु-कश्मीर के प्रख्यात कवि*ल रहमान राहीजी राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार चर्चा में आए जब उन्हें 1961 में .पुरस्कार प्राप्त हुआ ”साहित्य अकादमी“

*1980 में जम्मू ,कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी अवार्ड-1889 में भारत सरकार की फ़ेलोशिप,2000 में पद्मश्री से नवाजा गया.

साहित्य का भले ही तात्कालिक ए*वं प्रत्यक्ष प्रभाव न पडता होपर उसका दूरगामी असर होता .
(मनमोहनसिंह पूर्व प्रधान मंत्री.डा).है

15

इतिहास और मिथक के जरिए वर्तमान्को देखते कवि कुँवर नारायण

कुँवर नारायण)19 सितंबर 1927)

*“ जो लेखक सत्ता के साथ रहते हैं उन्हें देखना चाहिए कि सत्ता जनता के प्रति प्रतिबद्ध है या नहींलेखक को जनता का प्रतिनिद्धि .क्योंकि एक लेखक के लिए आम जनता का हित सर्वोपरि है, अगर राजसत्ता जनता से जुडॆ अपने .राज्य सत्ता तभी तक जब तक वह जनता के पक्ष में है .होना चाहिए सरोकारों से पीछे हट जाती है तो लेखक को भी सत्ता से नाता तोड लेना चाहिएएक सच्चे लेखाक के . ”आजादी“ लिए सबसे पहले और जरुरी चीझ है. वह अपने पक्ष बदल सकता हैक्योंकि वह समाज , .आआउर जनता का चौकीदार है

(कुँवर नारायण)

इस बात में कुछ सच्चाई है कि आज कुछ लेखक सत्ता और बाजार का समर्थन कर रहे है*ंमैं साहित्य . और कला के उत्सवों के आयोजन के खिलाफ़ नहीं हूँ लेकिन ऎसे मौकों पर हमारा द्ध्यान साहित्य और ऎसेव उत्सव यदि लेखकों और पाठकों का .कला से जुडॆ विषयों और मुद्दों पर केन्द्रीत रहना चाहिए द्ध्यान खींचते हैं और उन्हें एक दूसरे के साथ संवाद का मौका देते हैं तो ऎसे साहित्यिक उत्सव जरुर आयोजित होने चाहिए,. मैं साहित्य उत्सवों को एक अवसर के रुप में देखता हूँ

(कुँवर नारायण)

16 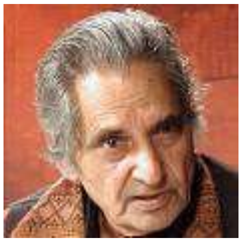 हिन्दी की वीणा ;“नीरज”

श्री गोपालदास सक्सेना ”नीरज“(4 जनवरी 1925)

उस वक्त मेरी उम्र करीब*17 बरस रही होगीहम लोग बा .ंदा में एक कवि सम्मेलन में शिरकत के लिए बस से जा रहे थेउस वक्त बच्चन ने मुझे .बस खचाखच भरी थी और मुझे सीट नहीं मिली .
मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मुझे उनसे इतना स्नेह मिला .अपनी गोद में बैठने को कहा था
(नीरज)

*’ हम कितना जीवित रहे हम = इसका नहीं महत्व,कैसे जीवित रहे(नीरज) .यही तत्व अमरत्व ,

(संस्मरण)

अपने सदाबहार गीतों के लिए जगप्रसिद्ध और मधुर कंठ के धनी सम्मानीय नीरज जी से मेरी एक बार मुलाकात हुई थीउस समय मैं बैतूल प्रमुख डाकघर में .संभवतः यह सत्तर के दशक की बात थी .
.कविताएँ लिखा करता था .कार्यरत था समय .गोष्ठियों मे जाना होता था-समय पर आयोजित काव्य-
.वे भी अक्सर इन गोष्ठियों में आया करते थे .उस समय जिला पुलिस अधीक्षक श्री पटोरियाजी थे जिसमें नीरजजी के अलावा बहुत से ,इसी समय एक आयोजन कोठीबाजार में आयोजित किया गया ख्यातलब्ध कवियों को भी आमंत्रित किया गया थायह वह दौर था जब नागपुर के कवि श्री मधुप .
संभवतः सारे .शहर कवि सम्मेलन आयोजित किए जाते थे-दर-पाण्डेय के कुशल मंच संचालन में शहर .सम्मेलन के बाद बैतूल पधारे थे-कवि मुम्बई में आयोजित कवि

प्रबुद्ध श्रोताओं की भीड खचाखच भरी थीयह वह समय था जन नीरजजी फ़िल्म .ों में गीत लिख रहे थे और अपने प्रसिद्धि के चरम पर थेमधुपजी अपने .सारे कार्यक्रम के केन्द्र बिंदु में वे ही थे .
उन्होंने अपना .जब नीरजजी का क्रम आया.काव्यकौशल और सिद्धहस्त संचालन का जादू बिखेर रहे थे पाठ करना प्रारंभ-गला साफ़ किया और कुछ गुनगुनाते हुए रचनाकियावे अपने गीत का एक अंतरा .
वाह रास नहीं ...नीरजजी को उनकी वाह .वाह कह उठते...पूरा भी नहीं कर पाते कि संचालक महोदय वाह शैली और विशेषता यह होती है कि वे पूरी .इनकी अपनी एक खास,जब भी वे गीत पढते है .आ रही थी .पूरी मस्ती के साथ उसमें खो जाते है-तनमयता के साथ मधुपजी का इस तरह बीच में खलल डालना

शायद उन्हें पसंद नहीं आ रहा थावे अपनी जगह से चुपचाप उठे और संचालक के माईक को उठाते . लगभग मधुपजी कॊ डांट .इस समय उनका गुस्सा चरम पर था. हुए अपने स्थान पर आकर बैठ गए -लगाते हुए बोले“मधुप इसके पहले भी मुम्बई में मैंने तुम्हे इस हरकत के लिए मना किया था लेकिन , नीरजजी की अपनी कैसी) .फ़िर अपना सुर साधने लगे.कुछ देर मौन रहे ”तुम हो की बाज नहीं आते फ़रमाइशों पर फ़रमाइशें ..फ़िर उन्होंने तनमयता से अपना गीत पढे (.इसे प्रायःसभी जानते हैं ,शैली है .होती रहीं और वे गीत पढते रहे

कार्यक्रम के समापन के पश्चात हम लोगो ने उनसे भेंट की और निवेदन किया कि हम केवल और केवल आपको ही सुनना चाहते हैं.इसके लिए कोई तिथि निश्चित करने का आग्रह भी हमने किया ,

बैतूल म्युनिसिपल के हाल में कार्यक्रम आयोजित हुआउन्होंने देर रात तीन बजे तक .नीरज जी आए . अपनी पसंद के गीत सुनाएउन संस्करणों में से एक यह भी था कि .और सुनाए ढेरों सारे संस्मरण . फ़िल्म में गीत लिखने के लिए ”जोकर“ निर्देशक श्री राजकपुर ने उन्हें अपनी-किस तरह फ़िल्म निर्माता प्यारे-मुम्बई बुलाया और किस तरह उन्होंने अपने गीतों की धुन तैयार करने में लक्ष्मीकांतलाल में मदद की.आदि-आदि., चारवे उससे ,मे उनका आरक्षण था .टी.पांच बजे के बीच बैतुल से गुजरने वाली जी- .रवाना हो गए

समय बीत जाता है और उसकी यादें मनजब भी कभी उन क्षणों को .मस्तिस्क पर अंकित हो जाती है- याद करता हूँ तो एक पछतावा सा होने लगता है कि काश उस समय मेरे पास कैमरा होता तो मैं उनकी तस्वीरों में उतारकर अपने पास सजोंकर रख पाता .

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सभी माननीय सदस्यों की ओर से, मेरी ओर से तथा यहाँ के प्रबुद्ध साहित्यकारों की ओर से आपको साधुवाद.धन्यवाद ज्ञापित करते हैं-

इसी कड़ी में कुछ और जोड़ते हुए मैंने भी अपनी ओर से पुण्य.स्मरण किया है-

,...

11 व्यंग्य संग्रह- हड़कंप -

12

डा.कौशक किशोर श्रीवास्तव

संवेदनशून्यता, आस्थाहीनता, तात्कालिक राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति हेतु सिद्धांतहीन समझौते, आम नागरिक को वोट की राजनीति का खिलौना बनाकर साधन, साध्य और साधना की एकरुप पवित्रता को तिलांजलि देकर कथनी और करनी के बीच लगातार बढती खाइयाँ, पुरखों से प्राप्त वैष्णवी मानसिकता की हजारों सालों की पुण्याई को ध्वस्त करने की मानसिकता, देश के भीतर सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता पर आधारित आम नागरिक के जीवन को सामान्य से और बेहतर बनाने और जीवन जीने योग्य बनाने की बजाय उसमें अशांति का जहर घोल देने की शाजिशों में लगातार वृद्धि हुई हैं. वहीं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हुई कुछ गत वर्षों की घटनाओं ने हमारे समक्ष बहुआयामी चुनौतियों और संकटपूर्ण स्थितियों का निर्माण किया है. जिससे न केवल राष्ट्रीय एकता ,संस्कृति, सामाजिक और राजनैतिक सिद्धांतों, लक्ष्यों, आदर्शों और उनकी प्राप्ति के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों, कार्ययोजनाओं पर गहराई से असर डाला है.

संकट के इस भयावह दौर में डा. कौशलकिशोर श्रीवास्तव का व्यंग्य संग्रह “हडकंप” इस बात की आश्वस्ती देता है कि वे अपनी पैनी लेखनी के माध्यम से समाज में व्यापत भ्रष्टाचार-मिथ्याचारिता और पाखण्डों को उजागर करते हुए मंगलकामनाएँ देते हैं कि इसका असर, इतना व्यापक हो कि समाज में अमन-चैन कायम किया जा सके. फ़िर हर व्यंग्यकार का यह दायित्व भी बनता है कि वह उन सब पर गहराई से चोट करे, जिसे वह गलत अथवा बुरा मानता है.

डा कौशलकिशोर श्रीवास्तव एक कुशल शल्य चिकित्सक होने के साथ ही एक अप्रतिम साहित्यकार भी हैं. इन दो विरोधाभासी ध्रुवों के बावजूद, एक दिलचस्प बात यह है कि आप पिछले तीन दशकों से अधिक समय से अपने लेखन-कर्म को लेकर इतने निस्पृह हैं कि रचनाकर्म से स्वयं को परे रखते हुए से लगते हैं, जबकि दूसरी ओर वे अपने जीवन और सृजन को लेकर उतने ही आत्म-सजग भी दिखलाई देते हैं.

आपकी रचनाओं के संदर्भ इतने साफ़-स्वच्छ और पारदर्शी होते हैं कि कहीं से भी अस्पष्टता का कोई चित्र नहीं बन पाता. आपकी रचनाओं को पढकर पाठक वैसा भी नहीं रह जाता, जैसाकि उसकॊ पढने के लिए होता हैं. आपकी रचनाएं पाठक को, एक अन्य लोक में ले जाने में समर्थ होती हैं. एक के बाद एक संग्रह का प्रकाशन होना, इस बात का संकेत देता है कि आप अपने लेखन-कर्म के प्रति कितने सजग हैं. अब तक आपके नौ संग्रह विभिन्न विधाओं में प्रकाशित हो चुके हैं..आपका पहला व्यंग्य संग्रह “आए न बालम”, दूसरा “बाइज्जत बरी” और यह तीसरा सद्द प्रकाशित संग्रह “हडकंप” आपके सामने है. इसके अलावा आपके दो काव्य-संग्रह “मधुराधिप” “अखिलम मधुरम”, दो गजल संग्रह “है प्यास सभी” तथा
....................इनके अलावा मेडिकल साईंस में “प्रतिरोधात्मक क्षमता” तथा “परिवार कल्याण” भी प्रकाशित हो चुके हैं. मेडिकल

साईंस के कई महत्वपूर्ण आलेख देशी-विदेशी जर्नल्सों में भी प्रकाशित हुए हैं. आपकी ओजस्वी लेखनी से प्रभावित होकर अनेक संस्थाओं ने आपका समय-समय पर सम्मान भी किया है.

व्यंग्य का मूल और प्राथमिक स्वर प्रतिष्ठान विरोधी होता है. एक निर्विवाद सत्य है कि एक तानाशाह जिस तरह सत्ता के शिखर पर बैठकर, आमजनों का जीना दूभर कर देता है. दूसरा सत्य यह है कि,आज के मनुष्य का जिस तरह से "वस्तुकरण" कर दिया गया है, जिसमें धनी लोग, चीजों की तरह चमकदार होते जा रहे हैं ,जबकि गरीबों को सर छुपाने को झोपडी तक नसीब नहीं होती. "व्यंग्य" इस विद्रुपता और दुरंगी चाल को बेनकाब करने के लिए धारदार हथियार की तरह काम करता है और इस बात को सचेत करता हुआ यह प्रश्न भी खडा करता है कि लूटमार का यह गोरखधंधा आखिर कब तक चलता रहेगा.?

जो आलोचक शाश्वत साहित्य की बात करते हैं, उनकी दृष्टि में "व्यंग्य" पत्रकारिता के दर्जे की वस्तु मान लिया गया है और उन्हें लगता है कि साहित्यकार व्यंग्य का उपयोग चटखारे लेने के लिए भले ही कर ले, का उपयोग किसी गम्भीर लक्ष्य के लिए नहीं किया जा सकता. ऎसे विचार को साहित्य के लिए जो आदर्श स्वीकृत कर रखे हैं, "व्यंग्य" उसकी धज्जियाँ उडाता है. सारे संदर्भों की पडताल की जाए तो यह बात स्पष्टरुप से कही जा सकती है कि **"व्यंग्य का मूल एवं प्राथमिक स्वर प्रतिष्ठान विरोधी ही होता है**

एक कुशल व्यंग्यकार अपनी धारदार और ओजस्वी लेखनी के माध्यम से, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार- मिथ्याचार और पाखण्डों को उजागर करते हुए, केवल और केवल इस बात की मंगलकामनाएँ करता है कि उसकी लेखनी का इतना पुरजोर और व्यापक असर हो कि समाज में अमन-चैन कायम किया जा सके. अतः हर व्यंग्यकार का यह पुनीत दायित्व बनता है कि वह उन सब पर चोट करे, जिन्हें वह समाज विरोधी मानता है.

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कांतिकुमार जैन ने व्यंग्य विधा पर लिखा है-" एक गंभीर मानवीय करुणा इन व्यंग्यकारों को उस सबको हिलाने-गिराने और तोडने के लिए बाध्य करती है, जो हमें सांस्कृतिक-रुप से खण्डहर का निवासी बनाए हुए है, एक विशाल मलवे के मालिक के रुप में. हम बहुत जी लिए, अब हमें खुली हवा चाहिए. व्यंग्यकार अपने व्यंग्य द्वारा जीवन के सीलन भरे बदबुदार कमरे में खुली हवा का एक झोंका भरने का उद्देश्य लेकर चलता है." उन्होंने यह भी लिखा कि-"एक व्यंग्यकार भ्रष्ट, अनैतिक, मिथ्याचारी और पाखण्डों को न भी बदल पाए, तो भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है. वह तो केवल उन लोगो को नैतिक समर्थन देता है जो ईमानदार हैं, नैतिक हैं और रुढिविरोधी है"

डा. कौशलकिशोर श्रीवास्तव अपनी निश्छल भावुकता में उन सभी पापाचारियों की बखिया उखाडते चलते हैं जो समाज के अंगों के लिए अमंगलकारी सिद्द हुए है. उनके लेखन में एक विशेष ऊर्जा प्रवाहित होती दीखती है, वह ऊर्जा उन्होंने अपने आत्मसंघर्ष एवं जटिल समय के मुडभेड से प्राप्त की हुई लगती है.

इस नए व्यंग्य-संग्रह का नाम है **"हडकंप".** और इसी नाम से एक व्यंग्य रचना आती है.. सबसे पहले हम "हडकंप: का अर्थ जानते चलें. कोई एक ऎसा ज्ञात अथवा अज्ञात भय जिसके चलते हड्डियाँ तक कांपने लगे. उसे हडकंप कहते हैं. इसमें आदमी डरा-डरा सा रहता है, भय के चलते आक्रांत सा रहता है. इसका असर पूरे शरीर में बना तो रहता है लेकिन कोई ऎसी मशीन या यंत्र अब तक नहीं बना है,जिसकी सहायता से हम उसे डेटेक्ट कर सकते हैं, लेकिन उसकी उपस्थिति बनी रहती है. व्यंग्यकार ने इस हडकंप के माध्यम से एक व्यंग्यरचना का सूत्रपात किया है ---- एक नए टीआई के आने मात्र से अवैद्ध धन्धों में हडकंप मच जाता है. इस आशय की खबर समाचार-पत्र में प्रकाशित होती है. एक आम आदमी इस हडकंप की खोज में निकल पडता है कि आखिर यह किस बला का नाम है.? थक-हार कर वह अंत में वह अखबार वाले के पास जा पहुँचता है और जानना चाहता है कि अखबार में प्रकाशित खबर के कारण हडकंप मचा है और जब उसे देखने गया तो मेरा ये हाल हो गया है. अखबार वाला इस

पर अपनी सफ़ाई देते हुए कहता है-" यह हडकंप की गलती है कि वह क्यों नहीं मचा !. हमारी ड्यूटी तो खबर छापना थी, सो हमने छाप दी". इस व्यंग्य की मारक-क्षमता पर दृष्टिपात करें कि व्यंग्यकार ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली से उन तमाम विसंगतियों पर कितनी कुशलता से करारा प्रहार किया है. इसी तरह आप उनकी अन्य रचनाएँ जिनमें आतंकवाद और मैं, उपभोक्ता और खाद्द निरीक्षक, अपराध कैसे रुके ?, प्रगति-पथ, अमीनगंज का जमींदार आदि में लेखनी का तेवर देख सकते हैं.

डा.कौशलकिशोर श्रीवास्तव एक ऎसे कुशल सर्जन रहे हैं जिन्होंने अनगनित शल्यक्रिया करते हुए मरीजों को जीवन-दान दिया है. यह कमाल उन्होंने एक नन्हीं सी-मामूली सी कैंची तथा अन्य अपकरणॊं की मदद से कर दिखाया था. इसी सर्जन के हाथ में जब कैंची अथवा अन्य औजार की जगह कलम होती है, तो वे उसे एक तेज धारदार औजार में बदल देते हैं और अपनी निर्भीक और बेबाक लेखनी से उन तमाम तरह के फ़रेबों-को उजागर करते हुए चलते हैं, जो न तो देशहित में होते हैं और न ही आम जनता के हित में होते हैं

"हडकंप" -संग्रह में करीब नब्बे व्यंग्य रचनाएँ प्रकाशित हैं, जिनके तेवर और व्यंजना-शक्ति का अद्भुत संयोजन हम देख सकते हैं. व्यंग्यकार ने अपनी लेखनी के माध्यम से रोजमर्रा की कशमकश,, संवेदनहीनता, आतंक, उत्पीडन, विडम्बनाएँ, भूख, मृत्यु और जीवन के बीच के बीच झूलते झंझावतों को उजागर किया है.. वे सामान्य-जन को प्रगतिशील जीवन-मूल्यों के प्रति सचेत करने के साथ ही समाज और राजनीति में भिदे हुए पाखण्ड को भी उद्घाटित करते चलते हैं. वे सामान्य जनता को सामाजिक-राजनीतिक समझदारी देने के साथ-साथ सडी-गली जीवन-व्यवस्थाओं को नष्ट कर, 'एक नयी समाज-संरचना का संकल्प"" लिए चलते दिखाई देते हैं.

इस नए व्यंग्य-संग्रह को पुस्तकाकार देने और आम पाठक तक अपनी बात पहुँचाने के लिए डा.कौशलकिशोर श्रीवास्तवजी धन्यवाद के पात्र हैं. मुझे आशा ही नहीं अपितु पुर्ण विश्वास है कि यह संग्रह नए-नए कीर्तिमान स्थापित करेगा.

13

नमि मेरी आँखे.

(कवि-राज हीरामन-मारीशस के प्रख्यात कवि-कहानीकार.)

स्टार पब्लिकेशंस नई दिल्ली. 150/-

स्टार पब्लिकेशंन प्रा.लि. से प्रकाशित कविता संग्रह "नमि मेरी आँखें" मारीशस के यशस्वी कवि राज हीरामन का यह दसवाँ कविता संग्रह अभी हाल में ही प्रकाशित होकर आया है. इससे पूर्व आपके नौ कविता संग्रह (1) कविताएं जो छप न सकीं

(2)छपकर रहीं कविताएं (3) चुभते फ़ूल(4) हंसते कांटे (5)अंधेरे का उजाला (6) उजाले का अंधेरा (7) धरती तले अंधेरा (8) एक जमीन आसमान पर (9) नेहा की निधि प्रकाशित हो चुकी हैं. "नमि मेरी आँखें". सद्यः प्रकाशित है..

इस कविता संग्रह में कुल 43 कविताएँ प्रकाशित है, जिसमें अधिकांश कविताएं वियोग को लेकर लिखी गई हैं. कवि ने संग्रह को जो शीर्षक दिया है तथा अपने वक्तव्य में इस बात का उल्लेख भी किया है कि ये कविताएं उनकी दिवंगत पत्नि श्रीमती "नमि" की विरह पीडा में लिखी गई हैं. उन्हें केन्द्र में रखकर कवि ने अपने जज्बातों को उजागर करने का उपक्रम किया है. जिन्हें मैंने काव्य-भाषा, काव्य-अवधारणा, आदि को लेकर अपने विवेक के आधार पर कुछ वर्गों में बांटने का उपक्रम किया है. यथा-(i)स्वप्न बुनती कविताएँ और उसकी छायाओं को लेकर लिखी गईं कविताएं -आज, आए मौसम जाए मौसम, साथ संग, याद आती हो, रे तकिया, अमरत्व, शांति दूत, तमाम परिवर्तन और उतार-चढाव, तथा पेबंद पे पेबंद

(ii) रागात्मक संबंधों को लेकर बुनी कविताओं में -कर ले श्रृंगार सखी, सपने में आई थीं तुम, कहीं, टूटा पर झुका नहीं. हौले-हौले, अर्सों का प्यार

(iii) वियोग को लेकर कविताओं में- ख्वाब बुने, साधना, कुछ आंसू, जख्मों पर पैबंद, कितना अच्छा था, सखी कहकर जाती, दर्दे घाव का फ़ूल, के लिए, आ जाओ तुम ,अलविदा, बोलती लाशें, मेरा दर्द, अलग रास्ते

(iv) प्रेम में डूबे मन को लेकर लिखी गईं कविताओं में- मत पूछ. एक गीत गा रहा हूँ. शब्द आदि

(v) बादल को उमडता-धुमडता देखकर लिखी कविताएं- जा रे बारिश, आ रे बादल, बादल बन के आउंगा, रूठकर आया हूँ, बादल घोडा, बारिश की रात

(vi) अन्य में- बिकाऊ है देश, किसमें कितना दम है, दुनिया गोल है, गुरु के दोहे, दिया हूँ मैं, हां मैं दर्द बेचता हूँ, आ रे पंछी, रॊटी और वोट, दिन शाम हुआ, बिम्ब, सूरज जेल में, आँखें, लगा आग पूंछ में, सूरज खोता नहीं, नीलकण्ठ, तथा चाचा रामगुलाम. आदि कविताओं को भी वर्गीकृत किया जा सकता है, विविधताओं से भरे इस संग्रह के लिए लेखक साधुवाद का पात्र है. संग्रह में वर्णित कविताओं को पढते हुए कहा जा सकता है कि-

कवि के भीतर मौजूद व्याग्रता, व्याकुलता और अधीरता के बावजूद भी ध्यान, मनन, चिंतन, धीरता, मंथरता और गंभीरता के साथ उनकी कविता ज्यादा दिखाई देती है. इन कविताओं में प्रेम की मधुर आँच है, प्रणय की उष्मा है, और प्रेम का लौकिक सौंदर्य है, जो देश और दुनियां की सीमाएं स्वीकार नहीं करता. निश्चित ही कहा जा सकता है कि आपका प्रेम असीम और निश्छल रहा है. कवि ने अपने रागात्मक संबंधों को लेकर एक काव्यात्मक दुनिया निर्मित करते हुए अपने दुख-सुख, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, संकल्प-स्मृतियों को अलग-अलग कोणॊं से उल्लेखित किया है. इन कविताओं को पढते हुए यह भी महसूस होता है कि तमाम तरह की ऎन्द्रिकता के बावजूद उनमें नारी के प्रति असीम सम्मान का भाव रहा है.

कवि ने अलक्षित रह जाने वाले प्रसंगों और भावों को पकडने की, एवं अपने आसपास के जीवन और जीवानुभवों में धंसते हुए उन तमाम बिंदुओं को पकडने की भी कोशिश की है. कविताएं तो कई बार डायरी के पन्नों की तरह पर्सनल बातों को उजागर करती प्रतीत होती हैं. पति-पत्नि के संबंधों पर आधारित कविताओं में एक "ताप" देखा जा सकता है, तो कहीं आलोचनात्मक टीपें भी हैं.

कवि अपने छॊटॆ-छॊटॆ निजी दुखों के बीच रहते हुए काव्य संभावनाओं का सफ़रनामा लिखने में उसका आत्मगत संसार बार-बार व्यक्त होता है. और उसने एक सचेत कवि की तरह अपने समय के सत्य को अपनी आँखों से देखने का और बतलाने

का रास्ता चुना.कई छोटी-छोटी अन्य रचनाएं भी संग्रह में अपना विशेष स्थान बनाते हुए दर्ज हुई हैं,जिनकी गूंज देर तक मन में बनी रहती है.

संकलन की कविताएं राज हीरामन के रचनाकार के आत्म का पारदर्शी प्रतिरूप है. छ्ल-छद्म, दिखावेपान और सारी बनावट से दूर, लाभ, लोभ वाली आज की खुदगर्ज दुनिया में, एक सरल, सहज,निष्कुंठ, निर्मल मन से हमारा सादर अभिवादन.

14 बर्फ़ सी गर्मी.

बर्फ़ सी गर्मी.

राज हीरामन (मारीशस के प्रख्यात कवि-कहानीकार)

(स्टार पाब्लिकेशंस.प्रा.लि, नई दिल्ली, 150/-)

जहाँ ,इस निर्दयस्त समय में जहाँ स्वार्थ और लोलुपता की आंधी चल रही हो गलाकाट स्पर्धाएं चल रही हों ,सिर्फ़ धन बटोरने के लिए नित नए फ़ंडे ईजाद किए जा रहे हों , जहाँ आचार-विचार और परंपराओं की धज्जियां उडाई जा रही हों जगत-जहाँ आदमी के संवेदना , फ़रेब और ,जहाँ खुदगर्जी,विक्षत करते हुए उसे खण्डहर में तब्दील किया जा रहा हो-को क्षत जहाँ आदमी के जीवन के शाश्वत मूल्यों ,औपचारिकता ही आदमी की पहचान बनती जा रही हो की जमीन लगातार छोटी होती जा रही हो भावभूमि के ,रस तथा गंध के संवेदनों,रूप-शब्द . ऐसे कठिन .कलापों से वह लगातार अजनवी बनता जा रहा हो-मूल्यवर्ती अहसासों और क्रिया

“ संग्रह-समय में राज हीरामन का कथा**बर्फ़ सी गर्मी**” का आना शुभ संकेत तो है ही साथ ही, यह आशा भी बंधती है कि वे विल्ुप्त होती जा रही मानवता को बचाने के लिए जद्दोजहद करते वे एक नयी चेतना और ऊर्जा के .उनकी कहानियों को पढकर राहत मिलती है .देखे जा सकते है उनकी लेखनी में .साथ उन तमाम तरह के मकडजालों को काट फ़ेंकने में समर्थ दिखाई देते हैं एक प्रकार की विकलता और छटपटाहट स्पष्ट रूप से दिखाई देती है.

मारीशस में जन्में कवि .कथाकार से मेरी मुलाकात उन्हीं के देश मारीशस में हुई थी- एक आलेख संग्रह ,एक साक्षात्कार संग्रह ,तीन कहानी संग्रह ,आपके अब तक दस कविता संग्रह अनेकानेक सम्मानों से सम्मानित होने के अलावा आपने च .प्रकाशित हुए हैार किताबों का संपादन भी किया हैवर्तमान में आप महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक एवं लेखन . “ विभाग मेंरिमझिम” तथा वसंत पत्रिका के वरिष्ठ उपसंपादक हैं-

बर्फ़ सी गर्मी में दस कहानियां हैंबर्फ़ सी गर्मी तथा लेट अस ब्रेक . कहानियां विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखी- गई कहानियाँ हैं मर ,घर वह बडा ,माँ-दाई-माँ . ,साहिल ,मानवाधिकार ,गया पर जिंदा था प्रेरणा .खेत सुमन के हो गए और धनराज , इन आदि कहानियों की अपनी जमीन,मनोव्यथा-किरदारों की दशा ,कहानियों के किरदार .मारीशस की है

बर्फ़ सी गर्मी शीर्षक चौंकाता हैसहज ही मन में प्रश्नाकुलता पैदा होती है कि भला . बर्फ़ तो पता चल ,जैसे आप कहानी के भीतर उतरते हैं-लेकिन जैसे .?.में गर्मी कैसे हो सकती है .जाता है कि आखिर वह गर्मी किस प्रकार की थी

उत्तरी व्हेल्स के एक छोटे से शहर की कहानी है यहइसमें एक अव .िवाहित पात्रा वह जानलेवा बीमारी में .जिसका नाम आंद्रे है ,उसका एक भाई है .जिसका नाम मारगारेट है,है आंद्रे के दो बेटे मारिस और .वह रोज उससे मिलने जाती है .ग्रसित एक अस्पताल में भरती है पर अपने पित .जो कुछ ही दूरी पर मानचेस्टर शहर में रहते हैं,जान रील हैंा को न कभी उसकी एक बेटी भी है .शामारैल लोल्ड होम केयर में देखने आए और ना ही अस्पताल में कभी अपने बाप को देखने और-कभी,मारिया इसी शहर के दूसरे छोर पर रहती है .मारिया .पूछताछ करने आ जाती है

वह दिन भी शीघ्र ही आ जाता है जब आंद्रे की मृत्यु हो जाती हैखबर . मिलते ही मोरिस .दो युवा पुत्रों और पुत्र वधुओं के साथ आ पहुंचते हैं-अपनी पत्नियों और दो-और जान अपनी जैसा कि वहाँ ईसाई धर्म प्रचलित है बनाये .उस धर्म के मुताबिक उसकी अंत्येष्टि की जाती है .

मिट्टी तब तक डाली .गए गढ्ढे में शव को उतारकर मिट्टी डाली जाती है जाती हैजब तक ,
जमीन मारगारेट आंग्रे .इसके बाद धन्यवाद भाषण देने का रिवाज है .को समतल नहीं बना दिया जाता
लेकिन वे हिम्मत नहीं .के बेटों से दो शब्द अपने पिता के बारे में कहने का आग्रह करती है
जुटा कहने के लिए कुछ भी तो नहीं था ?कहते भी तो क्या कहते .पातेदोनो के पास क्या वे यह .
कहते कि अपने पिता के जिंदा रहते हुए उन्होंने कभी उसकी परवाह नहीं की और न ही कभी
?उससे मिलने आए

दोनो को आगे न बढता देख .मारगारेट जान के बेटे आनथनी को आगे करती है ,
आनथनी विश्वविद्यालय में जेनेटिक इंजिनियरिंग का छात्र थाबोलने मे .ं माहिरऔर ,निर्भिक ,
न काफ़ी कुछ कहते .शब्दों का भण्डार था उसके पास .हीं किसी प्रकार की कोई झिझक थी उसमें
"-हुए और अंत में सभी के प्रति धन्यवाद देते हुए उसने कहा*एक गया पर सबको इकठ्ठा कर गया"अतः मृत्यु के बाद भी जीवन है .यही हमारे जीवन की शुरुआत है .* इसके बाद सभी
बरस से-मिलने से एक ऊर्जा उत्पन्न होती है और मन पर बरसों .बारी से गले मिलते हैं-बारी
पिघल-जमी बर्फ़ पिघल.कर आँखों के माध्यम से आँसू बन कर बहने लगती है

लेट अस ब्रेक= इस कहानी की पृष्ठभूमि इंग्लैण्ड की है .खरबों का मालिक है-डानियल अरबों .
पति बदलने में माहिर सुजन उसके जीवन में आती हैपांच साल तक वैवाहिक जीवन बीता .
"=चुकने के बाद एक दिन वह डानियल से कहती हैलेट अस ब्रेकऔर वह उसे छोडकर चली ."
" घर में बरसों से काम कर रही .जाती हैमेरी" का अचानक उसके जीवन में प्रवेश हो जाता है .
इंगलैण्ड में किस तरह जीवनजिया जाता है.उसको उजागर करती चलती है यह कहानी ,

माँ...माँ-दाई- एक खुद्दार महिला के इर्दगिर्द घूमती कहानी है यहव्यस्ततम जीवन यापन कर .
सारे संस्कारों को निपटा चुकने के बाद जब .जिसकी पत्नी का देहान्त हो गया है,रहे एक वकील
वकील साहब अपने घर में बरसों से कामकर रही दाई को साडियाँ और पैसे देना चाहते हैंतो ,
वह दसियों साडियों में से केवल एक साडी और नोटों के पुलंदे में से एक नोट निकाल कर यह
."मैं इस सबके लिए बहुत छोटी हूँ ! नहीं साहब-" कहते हुए चल देती है

"मनोविज्ञानिक तरीके से आगे बढती कहानी**मर गया पर जिन्दा था,**"दुखों से भयाक्रांत हो उठने
वाले माला और गुलशन किस तरह से बागी हो उठते हैं "**मानवाधिकार**रागिनी की कमनीय ,
लेकिन ,बडे अवसर उपलब्ध करवाता है-काया से प्रभावित अभयानंद उसे अपनी कम्पनी में बडे
तो सहसा रागिनी किस तरह उसके लिए प्रेरणा बन जा ,जब वह उसे छोड देता हैती है अपने
नाटकीय अंदाज से बढती कहानी आपको बांधे रखती हैहरिदेव और सुमन के अद्भुत चरित्र को .

"आप कहानी**खेत सुमन के हो गए**" में देख सकते हैं" एक पेन्शनर बाप .**धनराज"** खुद भूखों मरने पर विवश है .मार्मिक कहानी बन पडी है,जबकि उसकी बेटी उसके पैसों पर मजे उडाती है , कलम के धनी हीरामनजी ने भाषागत मुहावरों और लोकोक्तियों के माध्यम से कहानियों को .प्रभावशाली बनाने में कोई कसर नहीं छॊडी है

अंत में मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ इंदौर के डाजिन्होंने श्री राज ,राकेश त्रिपाठीजी को . "हीरामनजी के अनुरोध पर मुझे यह कहानी संग्रह**बर्फ़ सी जमी गर्मी**" और काव्य संग्रह **"नमि आँखें मेरी** "समीक्षार्थ भिजवाईं.

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में आपके अनेकानेक संग्रह प्रकाशित होंगे निश्चित ही आपकी साहित्यिक यात्रा मारीशस और भारत को जोडॆ रखने में . "सेतु "की भूमिका का निर्वहन करेगी.

एक सार्थक कहानी संग्रह मुझ तक भिजवाने के लिए पुनः आपका हार्दिक आभार.

भवदीय

गोवर्धन यादव

103, कावेरीनगर(.प्र.म)छिन्दवाडा,480001 (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति.प्र.संयोजक म)
09424356400

अंत में अपनी ओर से न चाहते हुए भी.

मेरे लिए यह सुखद संयोग बना कि महात्मा गांधी की कर्मस्थलि वर्धा में कार्यरत साहित्यिक बौद्धिक संस्था अभ्युदय बहुउद्देशीय संगोष्ठी ने माह मई/2014 में मारीशस भ्रमण का कार्यक्रम न बनाया होताऔर हिन्दी भवन भोपाल द्वारा मुझे आर्थिक संबल प्रदान न किया , .दिवास्वपन ही बना रहता/लोक-गया होता तो मारीशस मेरे लिए अब तक मात्र एक कल्पना विश्व हिंदी ,मारीशस की यात्रा करते हुए मेरी मुलाकात इस संग्रह के लेखक हीरामनजी से संस्थान के डिप्टी सेक्रेटरी श्री गंगाधर सुखलाल"गुलशनसाहित्यकार श्री -प्रख्यात लघुकथाकार ," महात्मा गांधी ,कला एवं सांस्कृतिक मंत्रालय में सलाहकार श्री राजनारायण गुट्टी ,रामदेव धुरंधर विश्वहिंदी संस्थान की निदेशक ,अलका धनपत.संस्थान की वरिष्ठ प्राध्यापिका डा कुंज.डी.व्ही.डाल,प्रल्हाद रामशरण ,हेमराज.डा , इन्द्रदेव भोला,विनोदबाला अरुण.डा ,धनराज शंभु , सूर्यदेव सिबोरत, डा रेशमी रामधोनी, श्रीमती ऊषा बासगीत तथा अन्य हिन्दी के बडॆ लेखकों से

शायद ही हो पातीऔर न ही मारीशस के महामहीम राष्ट्रपति माननीय कैलाश प्रयागजी से भेंट .
हुई होतीअलका धनपतजी ने सिर्फ़ हमें अंतरराष्ट्रीय हिंदी सचिवालय में कार्यरत प्राध्यापकों .डा .
वहीं उनके अथक प्रयास से मुझे मारीशस आकाशवाणी से अपना साक्षात्कार ,से भेंट करवाई
आपके ही मार्गदर्शन में मैंने अपने दो कहानी संग्रह .प्रसारित करने का सुअवसर उपलब्ध करवाया
“महुआ के वृक्ष“ ”तीस बरस घाटी ,”हिन्दी भवन भोपाल के मंत्रीश्री कैलाशचंद्र .संचालक मान-
”पंतजी की कृति संस्कार ,”संस्कृति और समाज,डाक निदेशक श्री केके यादव और उनकी .
“ धर्मपत्नि श्रीमती आकांक्षा यादव कीअभिलाषा,(संग्रह-काव्य)जंगल में क्रिकेट चांद,पर पानी आदि
मारीशस के वाचनालय के लिए संस्था की निदेशक डाकुंजल को भ.डी.व्ही.ेंट में देने का
सुअवसर प्राप्त हुआ होता.और न ही मानवसंग्रहालय के निदेशक श्री देव काहुलेसुरजी से -
.आत्मीय भेंट हुई होती

भारत को अपने पूर्वजों का घर मानते हुए सारे मारीशवासी अपने को अहोभागी मानते हैं और
यहाँ की प्रचलित रीति ,सुखसागर ,अपने पूर्वजों के द्वारा ले जाई गई रामायण ,रिवाजों को-
हालांकि यहाँ की .आदि एबं अन्य धार्मिक ग्रंथ तथा अन्य सामग्रियों को सहेजकर रखे हुए हैं
,(मिश्रित भाषा) बावजूद इसके ये लोग आपस में क्रोयले ,राजभाषा अंग्रेजी हैतथा हिन्दी को
अधिकाधिक प्रयोग में लाते हैंप्रसार तथा उन्ननयन के लिए -सारे साहित्यकार हिन्दी के प्रचार .
विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना ही इस बात के पर्याप्त प्रमाण है .प्राणपन से जुटे हुए हैं
.कि वे किस तरह भारत से और भाषा हिन्दी से कितना अनन्य लगाव रखते हैं

15 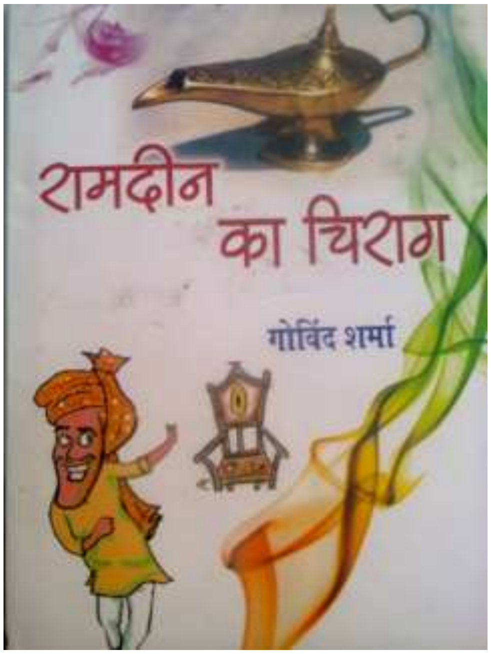

रामदीन का चिराग(लघुकथा संग्रह)

श्री गोविन्द शर्मा

() अपोलो प्रकाशन, राजा पार्क, जयपुर-200/- ()

“ बचपन में एक फ़िल्म देखी थी मैनेअलाउद्दीन का चिराग” अलाउद्दीन उस चिराग को अपनी हथेली से रगडता और चिराग में से एक जिन्न निकलता और कहता” हुक्म मेरे आकाअलाउद्दीन अपने मन के बात जिन्न से कहता और वह .” मन के किसी कोने में यह इच्छा बलवती हो उठी थी कि काश मुझे भी वह .पलक झपकते ही उसकी इच्छा पूरी कर देता चिराग मिल जाता तो मैं भी उससे अपने मन की अभिलाषाएँ पूरी करवा पाताउस समय बाबू ,वह युग फ़ैंटसी का युग था . “ देवकीनन्दान खत्रीचंद्रकांता संतति” लिख चुके थेतरह की -मन में तरह ,फ़िर क्या था .उसे भी पढने का सौभाग्य मुझे मिला . नए सपनों का विता-इच्छाएँ करवटे लेने लगती और नएन सा छाने लगताइस तिलिस्म से पीछा छुडा भी नहीं पाया था कि . शायद किताबों की .इन उपन्यासों में एक से बढकर एक कारनामें पढने को मिलते .जासूसी उपन्यासों की झडी सी लग गई थी फ़िल्में भी कुछ इसी तरह की बन रही थ .दुनिया से जुडने का इससे बडा योगदान और क्या हो सकता थाी जिसमें जादू था , .ये तो समय सापेक्ष कुछ बातें थीं ,खैर .ढंग-नए रंग ,नए पेंच-रोमांस था और कलाबाजी के नए

संयोग देखिए कि मेरे हाथ एक “चिराग” लगा“ वह अलाउद्दीन का चिराग नहीं था बल्कि वह .रामदीन का चिराग ”थाजिसमे चौरानब ,रामदीन का चिराग एक लघुकथा संग्रह है .ें लघुकथाएँ संग्रहित हैंजिसके लेखक हैं मित्र श्री , आप अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से तथा बालकथा कहानियों के माध्यम से देश में अपनी पहचान बना .गोविंद शर्माजी नाटक ,आपके अब तक तीस संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें बालकथाओं के संग्रह .चुके हैं संग्रह के अलावा दो व्यंग्य संग्रह भी शामिल हैयह हमारे और आप सबके लिए गौरव का विषय है कि आपकी अनेक .(कुल मिलाकर तीस संग्रह). आपकी रचनाधार्मिता को रेखांकित करते हुए देश की अनेकानेक संस्थाओं .रचनाएँ पाठ्यपुस्तकों में अपना स्थान बना चुकी है ने आपको सम्मानीत और पुरस्कृत भी किया
है .

संग्रह में प्रकाशित लघुकथाओं को अनेक वर्गों में बांटा जा सकता है यथा जिसमें -राजनीति-सत्ता और ताकत की बुनियादी बर्बर प्रकृतिशामिल ,प्रचार आधारित सच का खोखलापन ,राजनीतिक संस्थाओं के समक्ष साधारण मनुष्य की नियति , कहीं कुछ बोधकथा का मानक दिखती हैं तो कहीं .कुछ लघुकथाएं सामाजिक विद्वेष पर आधारित हैं .किया जा सकता है नीतिपरक कथाओं का अनूठा गुंफ़न हैकहीं रोजमर्रा की .तो कहीं कुछ पाने की प्रछन्न चाहना और न पा सकने की टीस भी है . भूख और ,उत्पीडन ,दमन ,आतंक ,वक्रताएं ,विडम्बनाएं ,विस्मय ,कौतुहल ,आकांक्षाएं ,और उसमें बिंधी इच्छाएँ ,कशमकश मस्तिस्क पर गह-मन ,मृत्यु के बीच अतिसाधारण अनिवार्यताओं का घटनारा प्रभाव छौडती हैं.

चिंतन और सांसारिक -जिसमें तत्व ,लेखक की अपनी शैली है और शब्दों की बुनावट में विलक्षणता आपकी भाषा में आन्तरिक तहों में खास किस्म .साथ चलती रहती है और साथ ही वृतांत और मन्थन भी-तथ्यात्मकता साथ सेंस आफ़ ह्युमर और खिलवाड का एक ,की विकलताएंऐसा घालमेल है जो ताकत की दुनिया में नैतिक प्रतिरोध का एक अनिवार्य हिस्सा बनाती हैसंघर्ष से -जो एक लम्बे आत्म ,आपकी रचनाओं में कसावट और सतर्कता भी देखने को मिलती हैं . .उपजती हैं

शर्माजी से मेरी मुलाकात बहुत पुरानी तो नहीं हैआपसे मेरी पहली .लेकिन उसे नयी भी नहीं कह सकते, “ मुलाकातबालवाटिका” के एक कार्यक्रम में भीलवाडाऔर पत्र .उसके बाद से लगातार मुलाकातें होती रही हैं .में हुई थी (.राज) फ़ेसबुक पर तो प्रतिदिन आपसे मिलना .व्यवहार भीऔर आपकी रचनाओं से रुबरु होने का सौभाग्य मिलता रहता है.

धर्मिता से साहित्य के भण्डार को अनमोल -मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि आप अपनी रचना .नए आयामों को स्पर्ष करते रहेंगे-रत्नों से भरते रहेंगे और नए

मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ इस संग्रह के प्रकाशक “अपोलो प्रकाशन” कोजिन्होंने कडी मेहनत से इसको , .प्रकाशित किया और उस अनाम चित्रकार को जिन्होंने लघुकथा को आधार बनाकर बडा ही मोहक और आकर्षक चित्र उकेरा

16 समीक्षा-आलेख **“तवा का तेज”**

लेखक- श्रीराम निवारिया

इस निर्दयस्त समय में जहाँ स्वार्थ और लोलुपता की आंधियाँ चल रही हों, जहाँ गलाकाट प्रतिस्पर्धाएं चल रही हों, जहाँ सिर्फ़ धन बटोरने के लिए नित नए फ़ंडों का इजाद किया जा रहा हो, जहाँ आचार-विचार और परम्पराओं की धज्जियाँ उडाई जा रही हों, जहाँ आदमी के संवेदेना जगत को क्षत-विक्षत करते हुए उसे खण्डहर में तब्दील किया जा रहा हो, जहाँ खुद-गर्जी, फ़रेब और औपचारिकता ही आदमी की पहचान बनती जा रहा हो, जहाँ आदमी के जीवन के शाश्वत मूल्यों की जमीन लगातार छोटी होती जा रही हो, शब्द, रूप ,रस तथा गंध के संवेदनों, भावमूमि के मूल्यवर्ती

अहसासों,और क्रिया-कलापों से वह लगातार अजनबी बनता जा रहा हो, ऎसे कठिन और निर्मम दौर में **श्रीयुत श्रीराम निवारियाजी** का कविता संग्रह **"तवा का तेज"** का आना इस बात का शुभ-संकेत तो है ही, साथ ही यह आशा भी बंधती है कि वे विलुप्त होती जा रही मानवता को बचाने के लिए जद्दोजहद करते हुए देखे जा सकते हैं. उनकी कविताओं को पढकर राहत मिलती है कि वे एक नयी चेतना और ऊर्जा के साथ उन तमाम तरह के प्रपंचों के मकडजाल को काट फ़ेकने में समर्थ दिखाई देते हैं. उनकी लेखनी में एक विकल बेचैनी और छटपटाहट स्पष्टरूप से दिखाई पडती है.

श्री निवारियाजी को पढते हुए मुझे येरोस्लाव साइफ़र्त की कविता याद हो आती है. कवि लिखता है----फ़िर एक फ़ूलदान में मैंने एक गुलाब लगाया / एक मोमबत्ती जलाई/ और अपनी पहली कविता लिखना शुरु किया/ जागो/ मेरे शब्दों की लपट ऊपर उठो/ चाहे जल जाए मेरी उंगुलियां.

निवारियाजी की प्रत्येक कविता में वह ताप/आवेग/उद्वेग देखने को मिलता है, जो अन्दर तक झझकोर देने में समर्थ है. उनमें एक बिल्कुल ही अलग तरह का अनुभव मिलता है..... एक ऎसा अनुभव.... जो जीवन... मन-प्राण को.....यहाँ तक की आत्मा को भी समृद्ध करता चलता है. उनकी कविताएं एक अदृष्य को उजागर करती सी जान पडती है.

किसी अज्ञातकुल कवि ने कहा है---एक कवि हमेशा अपने समय से रुबरु होता है. समय को समझे बिना, न तो कोई कविता लिखी जा सकती है और न ही समय को व्यक्त किए बिना वह कविता ही हो सकती है. प्रख्यात कवि श्री ओम भारतीजी ने **भूमिका** लिखते हुए इस बात को समग्रता से रेखांकित किया है.

काव्य संग्रह में 99 छोटी तथा तीन बडी कविताएं (चक्रवर्ती/ क्यों माँ ! यह सच है न ! तथा तवा का तेज, कुल मिलाकर 102 कविताएँ प्रकाशित है. चक्रवर्ती कविता तो काफ़ी समय पूर्व प्रकाशित हो चुकी थी, जो सर्वत्र सराही गई थी और चर्चा का विषय भी बन चुकी थी. तवा का तेज को संग्रह का नाम दिया गया है.

तवा का तेज में कवि नदी के उद्गम से लेकर, उस भूभाग से भी होकर गुजरता है, जहाँ-जँहां से वह प्रवहमान होती है. जंगल में विचरते लकडहारों, मछुआरे/आदिवासी गोंड राजा/ राजा का किला/ रेल्वे पुल/गंगा/ताप्ति/हरिशंकर परसाई का गाँव(रानी नागमति की कहानी) /गुमरखेडी/ साँगखेडा/इटारसी/ सोहागपुर के रहने वाले ब्लिट्स के संपादक अय्यूब सैयद/ स्टेशन सोनतलाई/मूँगफ़ली बेचता दौलतराम डबल एम.ए./बागरा स्टेशन(कवेलु के लिए प्रसिद्ध) क्रमशः अपना स्थान बनाते हुए चलते हैं.

कवि ने एक लोकचर्चा को भी इसमें शामिल किया है. जिसमें नर्मदा और तवा का मिलन और विछोह होता है. ऎसा होना एक प्राकृतिक घटना हो सकती हैं कि उनका प्रवाह अलग-अलग दिशाओं में मुड जाता है, लेकिन कवि की दृष्टि में वह एक असफ़ल प्रेम कहानी बन जाती है. इस कविता में कवि की दृष्टि उस नदी पर तो है, लेकिन उससे जुडी वे छोटी-बडी तमाम घटनाएं उसमें सहजरुप से जुडती चली जाती है, जहाँ उसका चेतन-अवचेतन मन बार-बार दौड लगाया करता रहा होगा. कवि के काव्यकौशल और पैनी दृष्टि को यहाँ दाद देनी चाहिए कि वह एक वस्तु को कितनी तरह से और कितने एंगल से देख सकने में समर्थ है. यही सामर्थ्य उस कविता को सामर्थवान बनाती है.

एक अर्थवान और सार्थक काव्य-संग्रह के लिए उन्हें साधुवाद.

****